जून १९९६

6/-

ऋषि प्रसाद

- परस्परदेवो भव : विश्वशांति का एकमात्र उपाय
- गीता का अनूठा समत्व योग
- महारोग मिटाओ
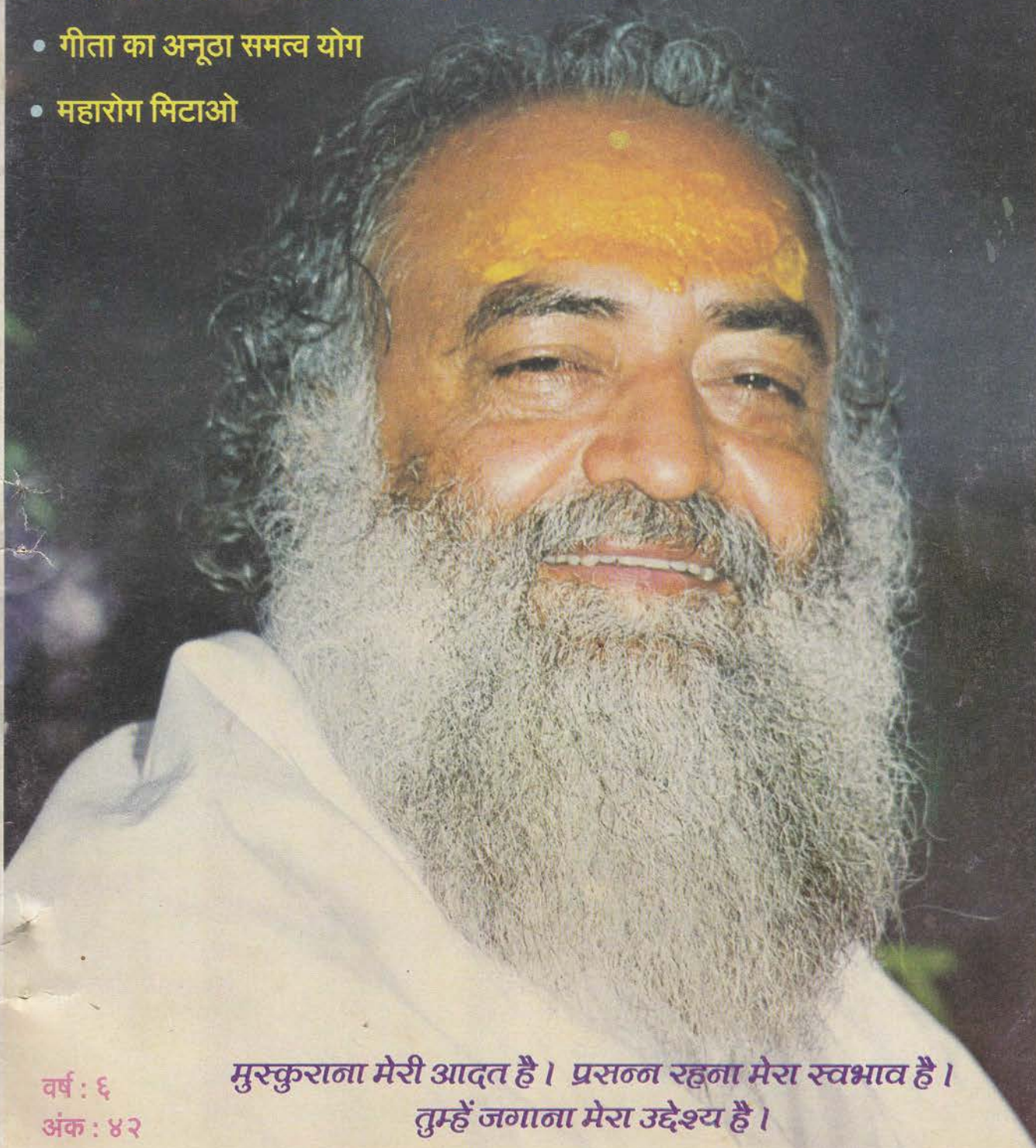
मुस्कुराना मेरी आदत है। प्रसन्न रहना मेरा स्वभाव है।
तुम्हें जगाना मेरा उद्देश्य है।

वर्ष : ६
अंक : ४२

ऋषि प्रसाद

वर्ष : ६
अंक : ४२
९ जून १९९६

सम्पादक : के. आर. पटेल

मूल्य : रू. ६-००

सदस्यता शुल्क

भारत, नेपाल व भूटान में
(१) वार्षिक : रू. 50/-
(२) आजीवन : रू. 500/-

विदेशों में
(१) वार्षिक : US $ 30
(२) आजीवन : US $ 300

कार्यालय
'ऋषि प्रसाद'
श्री योग वेदान्त सेवा समिति
संत श्री आसारामजी आश्रम
साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५
फोन : (०७९) ७४८६३१०, ७४८६७०२.

प्रकाशक और मुद्रक : के. आर. पटेल
श्री योग वेदान्त सेवा समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा,
साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५ ने विनय प्रिन्टिंग प्रेस, मीठाखली, अहमदाबाद एवं पारिजात प्रिन्टरी, राणीप, अहमदाबाद में छपाकर प्रकाशित किया ।

मनुष्य जिस क्षण भूत-भविष्य की चिन्ता का त्याग कर देता है, देह को सीमित और उत्पत्ति-विनाशशील जानकर देहाभिमान का त्याग कर देता है उसी क्षण वह एक उच्चतर अवस्था में पहुँच जाता है । पिंजरे से छूटकर गगनविहार करते पक्षी की तरह मुक्ति का अनुभव करता है ।

इस अंक में...

'ऋषि प्रसाद' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्रव्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक एवं स्थायी सदस्य क्रमांक अवश्य बतायें ।

अनूठा योग

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है :

योगस्थ कुरु कर्माणि
संगं त्यक्त्वा धनंजय ।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा
समत्वं योग उच्यते ॥

'हे धनंजय ! आसक्ति को त्यागकर सिद्धि और असिद्धि में समान बुद्धिवाला होकर योग में स्थित हुआ कर्मों को कर । यह समत्व भाव ही योग कहा जाता है ।'

(श्रीमद्भगवद्गीता : २.४८)

अपनी सुषुप्त कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत करके मूलाधार-स्वाधिष्ठान आदि केन्द्रों को रूपान्तरित करके सामर्थ्य पाने के योग को कुण्डलिनी योग कहते हैं ।

दो औषधियों के उचित मात्रा के मेल को आयुर्वेद में योग कहा है । दो अंकों के मेल को गणित में योग कहा है । अध्यात्मविद्या में हठयोग, ध्यानयोग, लययोग, कुण्डलिनी योग भी प्रचलित है ।

हठपूर्वक प्राणों को रोककर उस पर नियंत्रण पाने के अभ्यास को हठयोग कहते हैं । अपनी सुषुप्त कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत करके मूलाधार-स्वाधिष्ठान आदि केन्द्रों को, रूपान्तरित करके सामर्थ्य पाने के योग को कुण्डलिनी योग कहते हैं । **योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः** । पतंजलि ने चित्त की वृत्ति के निरोध को योग कहा है लेकिन श्रीकृष्ण का योग सबसे निराला है । सुख आ जाय तो चिपको मत । दुःख आ जाय तो घबराओ मत । अपने को सम रखो । यदि ऐसा कर सको तो समझ लेना कि तुमने समत्वरूपी परम योग साध लिया । इस योग को तुमने पूर्ण रूप से तीन मिनट के लिये भी साध लिया तो यह हजार वर्ष समाधि करनेवाले से भी आगे की खबरें दे देता है । यह योग चलते-फिरते, चालू व्यवहार में, संसार के कोलाहल में भी हो सकता है ।

हँसिबो खेलिबो धरिबो ध्यान ।
अहर्निश कथिबो ब्रह्मज्ञान ॥
खावे-पीवे न करे मनभंगा ।
कहे नाथ मैं तिसके संगा ॥

इसी बात को भोलेबाबा ने अपनी 'वेदान्त छन्दावली' में इस रूप में गाया है :

करता समाधि है नहीं
जिसमें नहीं विक्षेप है ।
नहीं मोक्ष ही है चाहता
रहता सदा निर्लेप है ॥
सब विश्व कल्पित जानकर
नहीं चित्त को भटकाय है ।
संलग्न रहता ब्रह्म में
सो धीर शोभा पाय है ॥

चित्त को अपने-आपमें स्थिर रखनेवाला शीघ्र समता को प्राप्त कर लेता है । आप इस योग में स्थिर होना चाहते हो तो थोड़े दिन ईमानदारी से अभ्यास करो कि 'सबमें एक ही परमात्मा है और उस एक परमात्मा में ही सब कुछ है । जो कुछ है वह उसी परमात्मा का स्वरूप है ।' इससे मति में समता आने लगेगी । चित्त की समता का ऐसा प्रभाव जगेगा कि शत्रु का हृदय भी आपके प्रति झुक जायेगा ।

समत्वरूपी परम योग को तुमने पूर्णरूप से तीन मिनट के लिये भी साध लिया तो यह हजार वर्ष समाधि करनेवाले से भी आगे की खबरें दे देता है ।

समतापूर्ण व्यवहार से सबको सुख मिलता है ।

बाहर के सुख-सुविधा के साधन जुटा लेना अलग बात है और हृदय में समता का सुख पाना अलग बात है। ऐहिक वस्तुओं का परिवर्धन-परिमार्जन करके उसका उत्तम उपयोग तो कोई भी कर ले- यह कोई बड़ी बात नहीं है परन्तु अपने अन्तःकरण को समता, पवित्रता, निर्भीकता आदि सद्‌गुणों से सजाकर, इसकी शक्तियों का सदुपयोग करके सत्य को पाने की ओर चल देना ही बड़ी बात है।

ईमानदारी से अभ्यास करो कि 'सबमें एक ही परमात्मा है और उस एक परमात्मा में ही सब कुछ है। जो कुछ है वह उसी परमात्मा का स्वरूप है।' इससे चित्त की समता का ऐसा प्रभाव जगेगा कि शत्रु का हृदय भी आपके प्रति झुक जायेगा।

जिसका अंतःकरण दुर्गुणों से भरा है वह स्वयं तो भयभीत, चिंतित, परेशान रहता ही है, दूसरों के लिए भी भय, चिंता, मुसीबत खड़ी कर देता है। शेर जंगल में घूमता है तब बार-बार मुड़कर देखता है कि कोई मुझे खा न जाय। वह तो हाथी के सिर का खून पी चुका है, उसे कौन खा सकता है ? फिर भी वह डरता है। उसका हिंसक मन ही उसे डराता है। जो दूसरों को भय दिखाता है वह खुद भी भयभीत रहता है। जिसके जीवन में समता का सद्‌गुण नहीं है वह स्थूल दृष्टि से हिंसा नहीं करेगा किन्तु कटु वाणी से किसीके मन को दुःख पहुँचायेगा तो वह भी हिंसा हुई। जो दूसरों को दुःख पहुँचायेगा वह खुद सुख से कैसे जी सकेगा ? उसके पास सुख के कितने भी साधन हों परन्तु उसे हृदय का सुख नहीं मिलेगा।

जिसका अंतःकरण दुर्गुणों से भरा है वह स्वयं तो भयभीत, चिंतित, परेशान रहता ही है, दूसरों के लिए भी भय, चिंता, मुसीबत खड़ी कर देता है।

शेर हाथी के सिर का खून पी चुका है, उसे कौन खा सकता है ? फिर भी वह डरता है। उसका हिंसक मन ही उसे डराता है। जो दूसरों को भय दिखाता है वह खुद भी भयभीत रहता है।

सुख पाने के लिए कोई बाहर से कितने भी उपाय कर ले, बड़े-बड़े मकान-दुकान या फैक्टरियाँ बना ले, मोटर-गाड़ियाँ रख ले, बढ़िया से बढ़िया वस्त्र पहन ले या अच्छे से अच्छी भोजन-सामग्री जुटा ले लेकिन उससे हृदय में तृप्ति का, परम संतोष का अनुभव नहीं होगा। इनमें से अगर कुछ पाने की वासना होगी और वह मिल जायेगा तो कुछ समय के लिए चित्त में हर्ष होगा लेकिन अन्दर का आनंद नहीं मिलेगा। हृदय में कुछ-न-कुछ खटकाव जरूर बना रहेगा। किन्तु यदि हृदय में समता रूपी धन है फिर बाहर का धन या सुख के साधन कम हों फिर भी फिकर नहीं होगी और ज्यादा होंगे तो उसमें आसक्ति नहीं होगी।

सुखं वा यदि वा दुःखं
स योगी परमो मतः।

सुख आये चाहे दुःख आ जाये लेकिन जो मति समत्व में स्थिर हो गई, वह श्रेष्ठ मति है। ऐसा मतिवाला आने-जानेवाली चीजों में आसक्त नहीं होता है, अनासक्त भाव से उसका उपयोग कर लेता है। कैसी भी परिस्थितियाँ आयें- चाहे सुख की हों या दुःख की- सब गुजरने देता है। उनसे हर्षित या व्यथित नहीं होता है। भोजन करेगा तो स्वास्थ्य का ख्याल करके भोजन का उपयोग कर लेगा। मजा लेने के लिए जो ज्यादा खा लेता है, वह भोजन का उपयोग नहीं करता वरन् उपभोग करता है। वास्तव में तो तुम वस्तु का उपभोग नहीं करते हो, वस्तु ही तुम्हारा उपभोग कर लेती है। भर्तृहरि ने कहा है :

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः ।

जिसकी मति समत्व में स्थिर नहीं हो पायी है, वह किसी-न-किसी कारणवश बुरी आदतों का शिकार बन जाता है। शराब या बीड़ी पीनेवाला समझता है : हम उसे पी रहे हैं किन्तु बीड़ी या शराब उसे ही पिये जा रही है, उसका उसे पता ही नहीं चलता है । वह उसका तन-मन-धन बरबाद कर देती है, आयुष्य नष्ट कर देती है । अगर वही तन-मन-धन और जीवन किन्हीं ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों की सेवा में लगा ले और उनके आदेशानुसार अपना जीवन बना ले तो वह खुद भी तर जायेगा, औरों को भी तार लेगा ।

किसी भी प्रकार के भोग में यदि मति आकर्षित हो जाती है तो वह हल्की मति है, कमजोर मति है । किसी भी प्रकार का भोग हो, वह भोक्ता को हर तरह से कमजोर कर देता है । भोगों की इच्छा छोड़ने मात्र से मति को विश्रांति मिलती है, मति पुष्ट होती है । जैसे- बाहर के व्यवहार को छोड़ देने से शरीर को आराम मिलता है । बाहर के क्रियाकलाप छोड़कर जब नींद में चले जाते हैं तब शरीर को और मन को आराम मिल जाता है । फिर जब उठते हैं तो ताजगी का अनुभव करते हैं यह तो सबका अनुभव है । ऐसे ही मन-बुद्धि को समता में स्थिर करने से- जो फालतू वृत्तियाँ उठती रहती हैं, फालतू के संकल्प-विकल्प उठते हैं वे छूट जाते हैं तो मन-बुद्धि को विश्रांति मिलती है। चित्त की विश्रांति प्रसाद की जननी है । प्रसन्न मन-बुद्धि में सामर्थ्य आता है । मति में सामर्थ्य आयेगा तो वह मति मतिदाता परमात्मा तक पहुँचा देगी, परमात्मा का साक्षात्कार करा देगी । साक्षात्कार का सरल उपाय यह है कि शीघ्रातिशीघ्र मति में समता का सद्गुण भर दो । समत्व में स्थिर हुई बुद्धि में विवेक जग जाता है और आदमी संसार के सुख-दुःख और हानि-लाभ से ऊपर उठकर, निर्लेप रहकर आत्मा-परमात्मा में स्थिति पा लेता है ।

भोगों की इच्छा छोड़ने मात्र से मति को विश्रांति मिलती है, मति पुष्ट होती है । मन-बुद्धि को विश्रांति मिलती है । चित्त की विश्रांति प्रसाद की जननी है । प्रसन्न मन-बुद्धि में सामर्थ्य आता है ।

संसार कल्पित मानता, नहीं भोग में अनुरागता ।
सम्पत्ति पा नहीं हर्षता, आपत्ति से नहीं भागता ॥
निज आत्म में संतृप्त है, नहीं देह का अभिमान है ।
ऐसे विवेकी के लिए सब हानि-लाभ समान है ॥

गुरुभक्तियोग

१. आप जब ध्यान करने बैठें तब अपने गुरु का एवं पूर्वकालीन सब संतों का स्मरण करें । आपको उनके आशीर्वाद प्राप्त होंगे ।

२. महात्माओं के ज्ञान के शब्द सुनें और उनका अनुसरण करें ।

३. शास्त्र एवं गुरु के द्वारा निर्दिष्ट शुभ कर्म करें ।

४. शान्ति का मार्ग दिखाने के लिए गुरु अनिवार्य हैं ।

५. 'वाहे गुरु' यह गुरु नानक के अनुयाइयों का गुरुमंत्र है । 'ग्रंथ साहब' पढ़ो तो आपको गुरु की महत्ता का परिचय होगा ।

६. गुरु की पूजा करके सदा उनका स्मरण करो । इससे आपको सुख प्राप्त होगा ।

७. श्रद्धा माने शास्त्रों में, गुरु के शब्दों में, ईश्वर में और अपने-आप में विश्वास ।

८. श्रवण माने गुरु के चरणकमलों में बैठकर वेद का श्रवण करना ।

९. गुरुसेवा महान शुद्धि करनेवाली है ।

१०. आत्म-साक्षात्कार के लिए गुरु की कृपा आवश्यक है ।

११. जितनी भक्ति-भावना प्रभु के प्रति रखनी चाहिए उतनी ही गुरु के प्रति रखो । तभी सत्य की अनुभूति होगी ।

१२. सदैव एक ही गुरु से लगे रहो ।

- स्वामी शिवानन्दजी

'परस्परदेवो भव'

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

हमारी भारतीय संस्कृति में जिनको देवतुल्य मानते हैं, उनके लिए शास्त्रों में कहा गया है :

मातृदेवो भव । पितृदेवो भव ।
आचार्यदेवो भव । अतिथिदेवो भव ।

माता-पिता, आचार्य और अतिथि को देवरूप जानकर उनका आदर करो । यह सामान्य व्यवहार की बात हुई । किन्तु हमारी आध्यात्मिक परंपरा की अनुपम खोज है कि सबमें वही एक का एक चैतन्य परमात्मा है । जो कुछ है सब वही है । उसका आदर करते हुए संतों-महापुरुषों ने बताया है :

परस्परदेवो भव ।

आज के युग में अगर इस सूत्र को व्यवहार में लाया जाय तो अशांति, लड़ाई-झगड़े, खून-खराबा सब मिट जाय । किसीने ठीक ही कहा है :

तुझमें राम मुझमें राम सबमें राम समाया है ।
कर लो सभी से प्यार जगत में कोई नहीं पराया है ॥
एक ही माँ के बच्चे हम सब एक ही पिता हमारा है ।
फिर भी ना जाने किस मूरख ने लड़ना हमें सिखाया है ॥
तुझमें राम मुझमें राम...

एक ही प्रकृतिरूपी माँ के हम सब बच्चे हैं और एक परमेश्वर ही पिता है । फिर भी ये लड़ाई-झगड़े, मेरा-तेरा हो रहा है क्योंकि सब अपने नहीं लग रहे हैं । सबमें अपनेपन की भावना जिसके चित्त में आ जाती है, उसके द्वारा जो कुछ होता है, उसमें अनायास दूसरों का हित निहित होता है । वह आदमी बाहर से भले ऊँचा न दिखता हो पर उसके कर्म बहुत ऊँचे होते हैं । उन कर्मों के फलस्वरूप उसे भीतर का सुख मिलता है तो बाहर के सुखों की परवाह नहीं करता है । बाहर के सुख, रूपये-पैसे, पद-प्रतिष्ठा के लिए लालायित नहीं होता है और अशांति, लड़ाई-झगड़े से दूर ही रहता है । अपने-आपमें ही संतुष्ट रहकर भीतर की शांति और आनंद को पा लेता है । जो दूसरों को सुख पहुँचानेवाले कर्म करता है वह आप भी सुखी रहता है । वही **परस्परदेवो भव** की भावना को सही रूप में निभा सकता है ।

जो लोग अपने को ऊँचा मानते हैं, शिक्षित मानते हैं, वे अहंकार से प्रेरित होकर जो कर्म करते हैं उनसे न तो उनका हित होता है न दूसरों का हित होता है । ऐसे शिक्षित लोग खतरनाक साबित हो सकते हैं । उनके द्वारा जो कर्म होते हैं वे सबके लिए दुःख, अशांति और चिंता बढ़ानेवाले होते हैं ।

प्रजा के खून-पसीने से इकट्ठे किये हुए पैसे विश्व की सरकारें टेक्स के रूप में लेती हैं और उस धन का उपयोग बम बनाने में करती हैं । अट्ठाइस सौ करोड़ आदमी मर जायें इतने बम तो बन चुके हैं । दुनिया की कुल आबादी- आप और हम- सब सात बार फिर-फिर से जन्म लेकर मरें इतने बम बना लिये हैं फिर भी तसल्ली नहीं है । कैसी अंधी शिक्षा है ! जो अपना अहंकार सजाने के पीछे लगे हुए हैं उन लोगों की यह करतूत है । दूसरों का शोषण करके, बम के बल पर या बंदूक के बल से कोई सुखी होना चाहे तो सुखी नहीं हो सकता है । फिर चाहे वह सिकंदर हो, हिटलर हो चाहे औरंगजेब हो । उन लोगों का जीवन दूसरों को तबाह करने में ही बीतता है, फिर वे दूसरों को देवरूप कैसे जान पायेंगे ?

> *परस्परदेवो भव । आज के युग में अगर इस सूत्र को व्यवहार में लाया जाय तो अशांति, लड़ाई-झगड़े, खून-खराबा सब मिट जाय ।*

विज्ञान के साथ आत्मज्ञान का समन्वय नहीं हुआ

है इसलिए विज्ञान उपयोगी और लाभदायी होते हुए भी भयानक साबित हो रहा है ।

आज के मनुष्य को पहले मानवशास्त्र का ज्ञान दिया जाना चाहिए... कर्मों के सिद्धान्तों को समझाना चाहिए । विचारों के प्रभाव के बारे में अवगत कराना चाहिए ताकि वे ऐसे ही विचार करें और ऐसे ही कर्म करें जिससे अपने-आपका और सबका भला हो । जिन विचारों से किसीका भी अहित होता हो ऐसे फालतू विचार उठते ही तुरंत उन्हें काट दें तो आप बुरे कर्मों से बच सकते हैं । इसलिए विचार पर सदैव निगरानी रखनी चाहिए ।

जो दूसरों को सुख पहुँचानेवाले कर्म करता है वह आप भी सुखी रहता है । वही परस्परदेवो भव की भावना को सही रूप में निभा सकता है ।

यह एक अकाट्य सिद्धांत है कि आप दूसरे के लिए जैसा सोचते हैं वैसे ही विचार दूसरे के मन में आपके लिए आयेंगे । दूसरों का शोषण करके, उनको मुसीबत में डालकर आप स्वयं सुखी होना चाहते हो तो उनके मन में भी आपके प्रति शोषण का भाव आ जायेगा ।

दूसरों का शोषण करके, बम के बल पर या बंदूक के बल से कोई सुखी होना चाहे तो सुखी नहीं हो सकता है । फिर चाहे वह सिकंदर हो, हिटलर हो चाहे औरंगजेब हो ।

एक राजा और एक नगरसेठ की आपस में मित्रता थी । वे रोज एक-दूसरे से मिले बिना नहीं रहते थे । नगरसेठ चन्दन की लकड़ी का व्यापार करता था । एकबार किसी कारणवश चन्दन की लकड़ी की भरती हो गई और बाजार कुछ दब गया । मुनीमों ने बताया कि आज-कल व्यापार का कामकाज कुछ घाटे में चल रहा है । नगरसेठ ने मुनीमों से पूछा : ''अब क्या करें ?''

जिन विचारों से किसीका भी अहित होता हो ऐसे फालतू विचार उठते ही तुरंत उन्हें काट दें तो आप बुरे कर्मों से बच सकते हैं । इसलिए विचार पर सदैव निगरानी रखनी चाहिए ।

मुनीमों ने कहा : ''चन्दन की लकड़ी का खरीदनेवाला कोई अच्छा व्यापारी मिल जाय तो ही हमें फायदा हो सकता है, नहीं तो नुकसान होगा ।''

सेठ के दिमाग में अचानक ऐसा विचार आया कि 'यदि यहाँ का राजा मर जाये तो उसको जलाने के लिए चंदन की बहुत-सी लकड़ियाँ चाहिए और वह अपने पास पर्याप्त मात्रा में है । हे भगवान ! ऐसा कुछ हो जाय कि मेरी फर्म बच जाए, मेरे धंधे में घाटा न हो ।'

उसके मन में ऐसा दुष्ट विचार आया । शाम को वह हमेशा की तरह राजा से मिलने गया ।

उसे आता हुआ देखकर राजा के मन में हुआ : 'यह नगरसेठ है । इसके पास बहुत पैसा है । ऐसा कोई नियम बनायें कि इसका धन राज्य की तिजौरी में जमा हो जाय ।'

अब बाहर से तो दोनों एक-दूसरे से जैसे रोज मिलते थे, वैसे ही मिले पर अब पहले जैसा आनंद नहीं आ रहा है । इस बात को दो-पाँच-दस दिन हुए । दिन पर दिन बीतते गये लेकिन पहले सहज स्वभाव से जैसी मिलती थी वैसी मस्ती गायब हो गई ।

एक दिन नगरसेठ ने राजा से पूछ ही लिया : ''राजन् ! पिछले कुछ दिनों से हमें वह आनंद और मस्ती क्यों नहीं आ रही है ?''

राजा ने कहा : ''मुझे भी ऐसा हो रहा है । क्यों ऐसा होता है यह जानना तो चाहिए । चलो, नगर के बाहर कुटिया बाँधकर जो महात्मा रहते हैं उनके पास चलें ।''

दोनों उस जीवन्मुक्त महापुरुष के पास आये । बाबाजी को प्रणाम करके उनके पास बैठे और अपनी समस्या सुनाने लगे । राजा ने कहा : ''बाबाजी ! हम दोनों बचपन के मित्र हैं । साथ में खेले, साथ में पढ़े, साथ में बड़े हुए । मैं राजा हुआ और यह नगरसेठ हुआ है । हम अत्यंत निकट के मित्र हैं । एक-दूसरे को मिले बिना रह नहीं सकते । लेकिन कुछ दिनों से ऐसा लगता है कि हररोज की तरह मिलते तो हैं पर वह रस नहीं आता है, इतना आनंद नहीं आता है ।''

आप दूसरे के लिए जैसा सोचते हैं वैसे ही विचार दूसरे के मन में आपके लिए आयेंगे ।

महात्मा ने कहा : ''सीधी-सरल बात है । आप दोनों अब तक शुद्ध भाव से मिलते रहे होंगे । जब एक-दूसरे के प्रति आपके मन में कुछ बुरे भाव जगे होंगे, कुछ ऐसे विचार उठे होंगे कि जिसमें दूसरे का अहित छुपा हो, इसलिए पहले जैसा आनंद चला गया है । अब आप प्रायश्चित्त करके अपना मन शुद्ध कर लो तो पहले जैसा आनंद फिर से आ आएगा ।''

राजा ने कहा : ''हाँ, मेरे मन में आया था कि इसके पास संपत्ति ज्यादा है तो कैसे भी करके राज्य के खजाने में जमा करवा लूँ ।''

तब नगरसेठ ने बताया : ''मेरा चन्दन की लकड़ी का व्यापार है उसमें घाटा होने जैसी नौबत आ गई है । मेरे मन में आया कि राजा का स्वर्गवास हो जाय तो मेरा चन्दन बिक जाय ।''

महात्मा ने कहा : ''ऐसा क्यों नहीं सोचा कि 'राजा के मन में आ जाय कि चन्दन की लकड़ी का फर्नीचर बना लें' ? तो भी तुम्हारा चन्दन बिक जाता । तुम ऐसा भी सोच सकते थे कि महात्माओं के यज्ञ-याग होते रहते हैं । उनको थोड़ा चन्दन यज्ञ के निमित्त दान में दे दूँ । गृहस्थी के लिये अपनी कमाई का कुछ हिस्सा सत्कर्म में, दान में खर्च करने का विधान शास्त्र में है । तो उससे तुम्हारे धन की शुद्धि हो जाती और तुम्हें पुण्य तो मिलता, साथ में अंतर का सुख भी मिलता ।

तुमने राजा के लिये गलत सोचा तो राजा के मन में तुम्हारे लिये गलत विचार आया । गलत सोचने से ही दोनों के बीच वैमनस्य आ गया ।''

अगर आपके मन में किसीके लिये बुरे विचार आते हैं, तो सामनेवाले का अहित हो या न हो परंतु आपका अन्त:करण जरूर मलिन हो जायेगा । फलस्वरूप मन में अशांति उत्पन्न होगी जो सब दु:खों का कारण है । कोई आपका कितना भी बुरा करना चाहे पर आप अगर सावधान होकर उसके लिये अच्छा ही सोचो और उसकी भलाई का ही चिंतन करो तो कोई आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा । बुरा सोचनेवाले के विचार भी बदल जाएँगे । उसका आयोजन सफल नहीं हो पाएगा ।

जो औरों को देता शक्कर है ।
वह खुद भी शक्कर खाता है ॥
जो औरों को डाले चक्कर में ।
वह खुद भी चक्कर खाता है ॥
शक्कर खिला शक्कर मिले ।
चक्कर दिला चक्कर मिले ॥
नेकी का बदला नेक है ।
बदों को बदी देख ले ॥
इसे तू दुनिया मत समझ भैया !
यह सागर की मझधार है ॥
औरों का बेड़ा पार कर तो ।
तेरा बेड़ा पार है ॥

अनेक रूपों में प्रभु ही बसे हुए हैं । इसलिए हम जो कुछ व्यवहार करेंगे वह भीतर छिपे हुए सच्चिदानंदघन परमात्मा को ध्यान में रखकर करेंगे तो व्यवहार भी बंदगी हो जाएगा ।

अविश्वास और धोखे से भरा संसार वास्तविक सदाचारी, सत्यनिष्ठ साधक का कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता ।

'अब पछताये होत क्या...'

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

एक बार मौलाना जलालुद्दीन अपने शिष्यों के बीच बैठे थे । सब कीर्तन-ध्यान की मस्ती में मस्त थे । किसी कॉलेज के प्रोफेसर अपने मित्रों के साथ घूमते-घामते वहाँ आ पहुँचे । उन्होंने सुना था कि यहाँ ध्यान, साधना और आत्मविद्या का प्रसाद पानेवाले फकीर और उनके शिष्य रहते हैं । वे लोग कुतूहलवश ही वहाँ जा पहुँचे थे ।

वहाँ जाकर देखा कि मौलाना ५०-६० साल की उम्र के लगते हैं और अपने प्यारे शिष्यों को आत्ममस्ती में मस्त बना रहे हैं । कोई नाच रहा है, कोई हँस रहा है, कोई काँप रहा है, कोई घूम रहा है, कोई चूप होकर बैठा है ।

> ***जो लोग दर्शक होकर फकीरों के द्वार पर जाते हैं, उनकी जैसी-जैसी मान्यताएँ होती हैं ऐसा-ऐसा अर्थ निकालते हैं । वे लोग संत के दर्शन का या संत के ज्ञान का कुछ फायदा नहीं ले पाते हैं ।***

यह सब देखकर उन्होंने अपनी मति से फकीर को और उनके व्यवहार को तौलना शुरू किया । एक ने कहा : ''अजीब फकीर हैं ये ! किस ढंग से सबको मस्त बना रहे हैं !''

दूसरे ने कहा : ''अरे ! यह आदमी खतरनाक मालूम होता है । सबको पागल बना रहा है ।''

तीसरे ने कहा : ''यह कोई ध्यान है ? ध्यान में हिलचाल होती है ? नाचना-गाना होता है ? ध्यान तो चूपचाप बैठकर किया जाता है ।''

चौथे ने कहा : ''कुछ भी हो, लेकिन ये लोग मस्ती तो ले रहे हैं । ध्यान कैसा होता है, यह तो हमें पता नहीं । पर ये लोग कुछ अजीब मस्ती में मस्त हैं । उनका रोम-रोम खुशी की खबरें दे रहा है ।''

तब किसीने कहा : ''जिस विषय का पता न हो उस विषय में बोलना बेवकूफी है । चलो, बेकार समय मत गँवाओ ।''

उस वक्त वे मूर्ख लोग अपना-अपना अभिप्राय देकर चलते बने । फिर कुछ महीनों के बाद स्कूल-कॉलेज की छुट्टियाँ आयीं । तब उनको हुआ : 'चलो, वहीं चलें ।' वे लोग फिर से गये, पर शिष्य होकर नहीं, साधक होकर नहीं, केवल दर्शक होकर गये ।

जो लोग दर्शक होकर फकीरों के द्वार पर जाते हैं, उनकी जैसी-जैसी मान्यताएँ होती हैं ऐसा-ऐसा अर्थ निकालते हैं । वे लोग संतदर्शन का या संत के ज्ञान का कुछ फायदा नहीं ले पाते हैं । जो लोग प्यास लेकर जाते हैं, जिज्ञासा लेकर जाते हैं, कुछ समझने का भाव लेकर जाते हैं उनमें कुछ सात्त्विकता होती है तो ऐसे लोगों को लाभ भी होता है ।

प्रोफेसर और उनके साथी विद्वत्ता का भूत अपनी खोपड़ी में रखकर फकीर के पास पहुँचे । इस बार उन्होंने देखा कि फकीर के सामने लोग बड़ी शांति से बैठे थे । न कोई नाच रहा है, न गा रहा है, न हँस रहा है, न रो रहा है, न काँप रहा है न चिल्ला रहा है । जलालुद्दीन भी मौन हैं, शान्त हैं ।

तब उस टुकड़ीवाले मूर्खों ने अपना अभिप्राय देना शुरू कर दिया : ''हाँ, अब ये लोग ध्यान में हैं । अब जलालुद्दीन और उनके शिष्यों को कुछ अक्ल आयी । पहले तो ये बिगड़े हुए थे, अब सुधर गये हैं ।''

जो लोग खुद बिगड़े हुए हैं उनको ही साधक लोग, भक्त लोग बिगड़े हुए दिखते हैं । ऐसे लोग 'रोक एण्ड रोल' में तो नाचेंगे, फिल्म की पट्टियाँ देखकर तो हँसेंगे,

रोयेंगे लेकिन भगवान के लिए भाव में आकर न हँसेंगे, न रोयेंगे, न नाचेंगे। वहाँ अपने को सभ्य समझेंगे और भगवान के लिये हँसना, रोना, नाचना असभ्यता मानेंगे। वे बेचारे अन्दर की मस्ती लेने की कला ही नहीं जानते हैं।

> ***जो लोग खुद बिगड़े हुए हैं उनको ही साधक लोग, भक्त लोग बिगड़े हुए दिखते हैं। ऐसे लोग 'रोक एण्ड रोल' में तो नाचेंगे, फिल्म की पट्टियाँ देखकर तो हँसेंगे, रोयेंगे लेकिन भगवान के लिए भाव में आकर न हँसेंगे, न रोयेंगे, न नाचेंगे। वहाँ अपने को सभ्य समझेंगे।***

ऐसे ही प्रोफेसर और उनके साथियों ने बेचारों ने अपना मत दिया : ''हाँ, अब ठीक है। अब चुप होकर बैठे हैं। महाराज भी चुप हैं, लोग भी चुप हैं, अच्छा है। अब ये लोग सुधर गये हैं। अब साधना करते रहेंगे, ध्यान करते रहेंगे तो कभी-न-कभी परमात्मा को पा लेंगे।''

दूसरे ने कहा : ''ठीक है, पाएँगे तब पाएँगे लेकिन पहले जो मजा आता था, अब वह नहीं आ रहा है। अब न हँसना है, न रोना है, न नाचना है, न गाना है, न गुनगुनाना है। बस, केवल चुप होकर बैठे हैं। जैसे चित्रनिर्मित मूर्तियाँ हैं। उस दिन ज्यादा मजा आ रहा था।''

तब किसीने कहा : ''वह ठीक था या यह ठीक है ऐसा कहना ही ठीक नहीं है। वैसे ही पहले से अपने पाप ज्यादा हैं कि हम इन लोगों की तरह मस्ती में मस्त नहीं हो पाते हैं, ऊपर से संतों और साधकों के संबंध में अभिप्राय देकर पाप का बोझ बढ़ाना उचित नहीं है। हमें चुप रहना चाहिए।''

किसीने कहा : ''चलो, बेकार की बातों में समय मत गँवाओ।''

> ***''तुम्हारे अज्ञानियों के कॉलेज में १५ साल तक खोपड़ी में कचरा भरते रहते हो, हर साल छुट्टियाँ देते हो फिर भी उनकी छुट्टी नहीं होती है। वे कहीं-न-कहीं बंधे रहते हैं। परन्तु यहाँ जो आता है और यहाँ के पाठ पढ़ लेता है उसकी तो सदा के लिये छुट्टी हो जाती है, साथ ही जन्म-मरण के चक्कर से भी छुट्टी मिल जाती है। हमारा ज्ञान ऐसा है।***

उस वक्त वे चले गये पर मौका मिला तो आये बिना नहीं रह पाये। अब की बार देखा तो जलालुद्दीन अकेले हैं। आकाश की ओर निगाहें हैं। उनके रोम-रोम से चैतन्य की मस्ती बिखर रही है। उनके अस्तित्व से मौन और आनंद की खबरें मिल रही हैं।

प्रोफेसर उनके सामने आकर बैठे। उन्होंने मौलाना से पूछा : ''बाबाजी ! सब कहाँ गये ? आपके भक्त और शिष्य जो आपके साथ रहते थे वे सब चले गये क्या ? आपकी ग्राहकी तो कम हो गयी ?''

जलालुद्दीन ने कहा : ''हाँ, मुझे जो देना था, वह मैंने दे दिया। उन्हें जो पाना था, वह उन्होंने पा लिया। मुझे जो पाठ पढ़ाना था, पढ़ा दिया। हमारे कॉलेज के दिन पूरे हो गये। अब छुट्टियाँ चल रही हैं।''

प्रोफेसर ने कहा : ''अभी हमारे कॉलेज की छुट्टियाँ तो पड़ी नहीं हैं।''

जलालुद्दीन ने कहा : ''तुम्हारे अज्ञानियों के कॉलेज में १५ साल तक खोपड़ी में कचरा भरते रहते हो, हर साल छुट्टियाँ देते हो फिर भी उनकी छुट्टी नहीं होती है। वे कहीं-न-कहीं बंधे रहते हैं। परन्तु यहाँ जो आता है और यहाँ के पाठ पढ़ लेता है उसकी तो सदा के लिये छुट्टी हो जाती है, साथ ही जन्म-मरण के चक्कर से भी छुट्टी मिल जाती है। हमारा ज्ञान ऐसा है। विद्यार्थी तुम्हारे पाठ तो हजार जन्म पढ़ता रहे फिर

भी बेड़ियाँ नहीं टूटतीं। हमारा पाठ जो एक बार सीख ले, फिर कुछ सीखना नहीं पड़ता। अंगूठाछाप आदमी भी हमारा पाठ पढ़े तो अच्छे-अच्छे, तुम जैसे पढ़े हुए आदमी को पढ़ाने की योग्यता पा लेता है। वह चाहे निर्धन दिखे पर कइयों को धनवान बनाने का सामर्थ्य रखता है।''

प्रोफेसर ठगे-से रह गये। वे एकटक जलालुद्दीन की ओर निहार रहे थे। जलालुद्दीन जो बोल रहे थे वह केवल भाषा नहीं थी। भाषा के पीछे कुछ सत्य था, तत्त्व का अनुभव था।

लोग समझते हैं कि पैसे हों, सत्ता हो या लोगों में प्रतिष्ठा हो तो ही सुखी जीवन गुजारा जा सकता है। पैसे के बिना सुख नहीं मिल सकता, सुधार नहीं हो सकता, सेवा भी नहीं हो सकती। लेकिन वे लोग भ्रांत मनोदशा में जी रहे हैं।

जलालुद्दीन ने आगे कहा : ''मेरा पाठ पढ़नेवाला व्यक्ति जहाँ कहीं जाएगा, जो कुछ करेगा उसके लिये शुभ हो जाएगा। जिन वस्तुओं को देखेगा वे प्रसाद हो जाएँगी और जहाँ कहीं रहेगा वह भूमि तीर्थ हो जाएगी। वह जितने दिन जीएगा उतने दिन मानो हर दिन दिवाली और हर रात पूनम हो जाएगी। ऐसा पाठ पढ़ाकर अब मैं विश्रांति ले रहा हूँ।''

वे प्रोफेसर तो पढ़े-लिखे आदमी थे। कुछ सोचकर वे नम्रता से बोले : ''महाराज ! हम भी आपसे पढ़ना चाहते हैं। हमें भी आप पाठ पढ़ाइये।''

जलालुद्दीन बोले : ''अब मेरे पास समय नहीं है। तुम कई बार यहाँ आते रहे... सब देखते रहे। परन्तु तब मेरे पाठ पढ़ने की तुम लोगों में कोई उत्सुकता नहीं थी। अब मैंने अपना काम निपटा लिया है। अब मैं आखिरी क्षणों के इन्तजार में कुछ दिन बिता दूँगा। फिर इस संसार के शरीररूपी चोले को छोड़कर अपनी आत्मा में लीन हो जाऊँगा। वक्त यूं ही चला गया, तुम समझ नहीं पाये। जगत की विद्या पढ़ानेवाले प्रोफेसर तो लाखों-लाखों मिल जाएँगे, किन्तु जगदीश्वर का पाठ पढ़ानेवाला कभी-कभी, कोई-कोई आता है। वह जब आता है तो कुछ श्रद्धा-भक्तिवाले लोग उनसे थोड़ा-बहुत पा लेते हैं और बाकी के वैसे ही रह जाते हैं।''

> ***"जगत की विद्या पढ़ानेवाले प्रोफेसर तो लाखों-लाखों मिल जाएँगे, किन्तु जगदीश्वर का पाठ पढ़ानेवाला, कभी-कभी, कोई-कोई आता है। वह जब आता है तो कुछ श्रद्धा-भक्तिवाले लोग उनसे थोड़ा-बहुत पा लेते हैं और बाकी के वैसे ही रह जाते हैं।"***

आप स्टेशन पर पहुँचे हो और ट्रेन भी उस समय खड़ी हो। अगर आप कहीं जाना चाहते हो तो समय रहते ही, ट्रेन जब खड़ी हो तब ट्रेन में बैठ जाना चाहिये। अगर सोचने में रह गये तो चुक गये। ट्रेन रवाना होने की तैयारी में हो तब तक भी बैठ सकते हो। तुम कहीं भी जाना चाहते हो वहाँ पहुँच सकते हो। परन्तु ट्रेन चली जाए उसके बाद तो फिर सिर कूटना ही रहेगा।

ऐसे ही प्रोफेसर बेचारे सोचने में ही रह गये। आये तो सही फकीर के पास... दो बार, तीन बार, चार बार... पर ऐसे के ऐसे ही रह गये। सब आपस में एक दूसरे को दोष देने लगे : 'तूने ऐसा कहा... तूने वैसा कहा।' जब फकीर के पास समय नहीं रहा तब आये तो फिर उनके हाथ सिर कूटना ही रहा। ऐसे लोगों के लिये कहावत सार्थक होती है कि :
अब पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

उस समय तो दर्शक बनकर आये थे। अगर साधक बनकर, जिज्ञासु बनकर आते, हरिनामरूपी गाड़ी में बैठ जाते तो भवसागर से पार हो जाते। भवसागर पार नहीं भी होते तो भी भवसागर से पार होने की कुछ कला ही सीख लेते। इतना भी नहीं होता तो सत्संगियों के बीच बैठकर कथा सुनते तो कुछ समझ का विकास होता, कुछ पाप मिटा सकते। पर जो लोग अपने को समझदार मानते हैं

वे सत्संग में नहीं बैठ सकते । जो लोग जानते हैं कि अपनी समझ से, अपनी जानकारी और अपने सुख से भी अधिक समझ है, विशेष सुख है और उसे पाने में अपने समय का सदुपयोग कर लेना चाहिये ऐसी जिनकी सन्मति होती है, वे ही लोग संतों के सान्निध्य में शांति और आनंद का अनुभव कर सकते हैं । वे ही संतों के सान्निध्य का लाभ लेकर परमात्म-प्राप्ति की ओर चल पड़ते हैं और अपने मनुष्य जन्म को सार्थक कर लेते हैं ।

❀

'परमारथ के कारणे...'

वृक्ष कबहुँ नहीं फल भखे, नदी न पीवे नीर ।
परमारथ के कारणे, साधु धरा सरीर ॥

'वृक्ष कभी-भी स्वयं फलों को नहीं खाता । नदी कभी स्वयं जल नहीं पीती । उनका जीवन स्वाभाविक ही परहित के लिए होता है । इसी प्रकार संत-महापुरुष भी परमार्थ के लिए ही शरीर धारण करते हैं ।'

संत कबीर का यह सहज स्वभाव था कि जो लोग उनका सत्संग सुनने आते थे उन्हें यदि देर हो जाती तो कबीरजी आग्रह करके उन्हें भोजन के लिए रोक लेते थे ।

एक बार उनके पुत्र कमाल ने कहा :

''पिताजी ! कृपा करके आप लोगों से यह न कहा करें कि 'भोजन करके जाओ ।' आप तो बोल देते हैं किन्तु भोजन की व्यवस्था करने में हमें बहुत तकलीफ होती है । हमें कर्जा लेना पड़ता है । कर्जा भी बढ़ता जा रहा है अतः सीधा-सामान देने में दुकानदार भी आनाकानी करते हैं । अतः आप कल किसीको मत रोकना ।''

कबीरजी : ''अच्छा, ठीक है । नहीं रोकना होगा तो नहीं रोकूँगा ।''

कमाल : ''इसका क्या मतलब है, पिताजी ?''

कबीरजी : ''उस समय का कोई पता नहीं । जैसा होगा, देखा जायेगा । 'रोकूँगा' ऐसा भी नहीं कहता और 'नहीं रोकूँगा' ऐसा भी नहीं कहता ।''

वास्तव में संतों के जीवन में कोई भी आग्रह नहीं होता कि 'यह करेंगे... वह करेंगे ।' उनका तो प्रत्येक कार्य बड़े सहज ढंग से होता है । उनका जीवन बड़ा सहज होता है ।

दूसरे दिन सत्संग के बाद कबीरजी बोल उठे :

''अरे ! बहुत देर हो गई है, धूप भी बहुत है । भोजन करके जाओ ।''

कमाल ने न बोलने के संकेत किये किन्तु कबीरजी पर उसका कोई असर नहीं हुआ । कमाल को उस दिन भी भोजन करवाना पड़ा । जब शाम हुई तब कमाल बोला :

''यदि आप ऐसा ही करते रहेंगे तो चोरी करने के सिवा कोई चारा न बचेगा ।''

तब कबीरजी ने कहा : ''सत्संगियों को भोजन कराने के लिए चोरी करने की जरूरत पड़ेगी तो चोरी भी करेंगे ।''

कमाल : ''फिर आपको भी साथ में आना पड़ेगा ।''

कबीरजी : ''हाँ हाँ... क्यों नहीं ?''

एक बार आधी रात को कमाल ने जगाया कबीरजी को और कहा :

''अभी-भी आप मान जाइये, वरना चोरी करने चलना पड़ेगा ।''

कबीरजी तो उठे और साथ हो लिये कमाल के । आधे रास्ते में कमाल ने पूछा : ''पिताजी ! अब क्या ख्याल है ? अब आप लोगों को क्या कहेंगे ?''

कबीरजी : ''पता नहीं । किन्तु तुम पूछ क्यों रहे हो ?''

कमाल : ''मैं इसलिए पूछता हूँ कि शायद आप अपना निर्णय बदल डालें ।''

मान्यताओं में घृणा है, गहराई में कोई घृणा नहीं, गहराई में कोई संघर्ष नहीं, कोई खिंचाव नहीं । बाहर ही खिंचाव-तनाव, घृणा आदि पैदा हुए हैं । वह भी सामाजिक व राजनैतिक तुच्छ घटनाओं के कारण होते हैं ।

कबीरजी : ''हे मेरे प्रभु ! तेरी मर्जी पूरण हो।''

कबीरजी की कोई पकड़ नहीं है। बुद्ध पुरुष की कोई पकड़ नहीं होती। बुद्धू की ही पकड़ होती है, अज्ञानी की ही पकड़ होती है कि 'ऐसा ही होना चाहिए, ऐसा नहीं होना चाहिए।' अरे ! सब स्वप्न है। ऐसा हो तो भी क्या और न हो तो भी क्या ?

हमारी न आरजू है न जुस्तजू है।
हम राजी हैं उसीमें जिसमें तेरी रजा है॥

कमाल लिये जा रहा है कबीरजी को। कुछ समय के बाद वे एक दुकानदार के घर पहुँचे। आगे दुकान थी, पीछे घर था। जब वे दोनों दीवार के पास पहुँचे तब कमाल सोचने लगा कि अब मैं सेंध लगाने को कहूँगा तो पिताजी रोकेंगे, मना करेंगे।

उसने कहा : ''मैं सेंध लगाता हूँ।''

कबीरजी : ''इसमें पूछने की क्या बात है ? तुझे उठाकर यहाँ तक ले आया हूँ तो सेंध लगाने के लिए ही तो लाया हूँ। जाकर चतुराई से सेंध लगा, इसमें चिन्ता क्या करनी ?''

कमाल सोचने लगा कि पिताजी मजाक कर रहे हैं। किन्तु अब तो मैं सेंध लगाने ही लगता हूँ। जब वे रोकेंगे तभी रुकूँगा। वह भी आखिर कबीर का बेटा था, जैसा-वैसा तो नहीं था। उसने सेंध लगायी।

कबीरजी : ''अरे ! सेंध डरते-डरते क्यों लगा रहा है ? अच्छी तरह से लगा। ऐसे ढंग से लगा कि घर के लोग जागने न पायें। उनकी नींद खराब न हो और हमारा समय खराब न हो, ऐसे बढ़िया ढंग से सेंध लगा।''

आज तक तो पिता ने बेटे को सिखाया है कि झूठ नहीं बोलना, चोरी नहीं करना, ऐसा नहीं करना, वैसा नहीं करना, लेकिन आज वे ही पिता बेटे से कह रहे हैं : 'चोरी करो और अच्छी तरह करो।'

आज कबीर कैसे अनोखे मालूम हो रहे हैं लेकिन उस वक्त तो कबीर बेकार आदमी मालूम हो रहे होंगे। कमाल सोचता है कि लोगों को पता चल जाएगा तो सत्संग में कोई नहीं आएगा लेकिन कबीरजी को इसकी परवाह ही कहाँ थी ! 'कोई नहीं आएगा तो न सही। जो होगा सो होगा, अभी तो सेंध लगा लो।'

कमाल ने सेंध लगा ली। साधु-सेवा के लिए जितना जरूरी था, उतना सीधा-सामान उठाकर गठरी बाँध ली। कमाल गठरी लेकर बाहर निकल रहा था, तब कबीरजी ने कहा :

''इन लोगों को कह तो दे कि 'हम ये माल लिए जा रहे हैं।' पहले तो मैंने तुझसे कहा था कि शांति से सेंध लगा। इन लोगों की नींद खराब न हो ऐसे लगा लेकिन अब तो प्रभात होने आई है। लोग रात को सोये होंगे तो रजोगुण-तमोगुण में सोये होंगे। अब सुबह जल्दी उठेंगे तो सत्त्वगुण में आयेंगे, कुछ अच्छा चिंतन करेंगे। अब तो उन्हें जगा दे।''

कमाल कहता है : ''यह तो हद हो गयी ! चोरी ही करनी है तो उन्हें जगायें क्यों ?''

तब कबीरजी बोले : ''तू अपने को चोर मानता है इसीलिए डरता है। चोर मानता है इसीलिए उनको नहीं जगाता है। बेटा ! अपने को कुछ मानोगे तो मार खाते रहोगे। अपने को साहूकार मानोगे तो चोरी से डरोगे, अपने को चोर मानोगे तो साहूकार से कतराओगे। अपने को कुछ मानो नहीं।''

आप अपने को हिन्दू मानोगे तो मुसलमानों से घृणा होगी, मुसलमान मानोगे तो हिन्दू से घृणा होगी। अपने को सवर्ण मानोगे तो हरिजनों से घृणा होगी और हरिजन मानोगे तो सवर्णों से घृणा होगी। अपनी मान्यताओं से ही घृणा पैदा होती

> *संतों के द्वारा जो कुछ होता है वह सहज में होता है और जो होता है उसमें अनेकों की भलाई निहित होती है। जाने-अनजाने भी उनसे लोकहित के कार्य होते रहते हैं। फिर वे चाहे सामान्य रूप से हों, चाहे चमत्कार के रूप में। उनका जीवन बीतता है परहित में ही।*

है । मान्यताओं में घृणा है, गहराई में कोई घृणा नहीं, गहराई में कोई संघर्ष नहीं, कोई खिंचाव नहीं । बाहर ही खिंचाव-तनाव, घृणा आदि पैदा हुए हैं । वह भी सामाजिक व राजनैतिक तुच्छ घटनाओं के कारण होते हैं ।

कबीरजी का बेटा कबीरजी का व्यवहार देखकर हैरान हो रहा है । वह अपनी मति से कबीरजी को नाप रहा है और कबीरजी अपनी जगह पर, अपनी आत्मा में खड़े हैं । कबीरजी को कोई अपनी नजरों से देखे तो कभी तो पूरे चोर मालूम होंगे और कभी साहूकार भी मालूम होंगे । एक ही समय में एक ही साथ वे चोर भी हैं, साहूकार भी । साहूकार इसलिए हैं कि जो जरूरी था वही लिया है, रूपये-पैसे नहीं उठाये हैं । साधु-सेवा के लिए केवल सीधा-सामान ही लिया है । जिस समय जो काम करना जरूरी लगा वह कर लिया । कबीरजी ऐसे पूरे साहूकार हैं और वे चोर इसलिए हैं कि साधारण आदमी जैसे करते हैं, उसी ढंग से चोरी कर रहे हैं । वैसे तो खुशामद करके, चुपके से जेब काटकर, किसीको ठगकर तो बहुत लोग चोरी का काम कर लेते हैं ।

सच पूछो तो दुनिया में चोर या साहूकार जैसा कुछ नहीं है । श्रीकृष्ण ने देखा कि 'चोरी भी एक कला है । यह भी मेरी एक लीला है ।' लेकिन चोरी करो तो ऐसे करो कि उसमें अपना स्वार्थ न हो, केवल दूसरों का हित ही हो । तुम भी अपने अंतर्यामी श्रीकृष्ण से एक होकर जो कुछ करोगे वह लीला हो जाएगी । दूसरों के हित के लिए, दूसरों की तृप्ति के लिए चोरी भी करोगे तो वह चोरी नहीं होगी ।

जगत में चोरी का यह मामला तो अनंत जन्मों से, अनंत योनियों से चला आ रहा है । पशु-पक्षी आदि कोई भी जीव मौका देखकर चोरी करके अपना भोजन पा लेते हैं । जैसे छिपकली अटकल करके अपना शिकार झपट लेती है, मछली भी अटकल से अपनी खुराक पा लेती है । तो यह जो दूसरों से झपटने की, दूसरों के शोषण की अक्ल है वह तो चौरासी लाख जन्मों से चली आ रही है । यदि तुम भी ऐसी ही अक्ल बनाये रखोगे तो विकृत मन के हो जाओगे । फिर मनुष्य जन्म से पार नहीं हो पाओगे ।

कबीरजी कहते हैं कमाल से : ''आवाज लगा दे कि हम माल लिए जा रहे हैं, संभल जाना । इधर-उधर मत भटकना । माल ठिकाने पर जा रहा है ।''

अब बात तो ठीक है । माल ठीक जगह पर ही जा रहा है । उसका पूरा सदुपयोग होगा । साधक खायेंगे, भजन करनेवाले खायेंगे ।

कमाल ने लगायी आवाज कि : ''जागो रे... लोगों ! हम माल लिए जा रहे हैं ।''

आवाज सुनकर लोग जाग गये ।

कमाल : ''पिताजी ! लोग तो जाग गये ?''

कबीरजी : ''तू आ जा ।''

कमाल ज्यों-ही बाहर निकलने को हुआ त्यों-ही लोगों ने उसका पैर पकड़ लिया ।

कमाल : ''इन्होंने तो मुझे पकड़ लिया है ।''

कबीरजी : ''पकड़ लिया तो पकड़ लिया । धड़ इनके हाथ में, सिर मेरे हाथ में । मैं सिर काटकर लिए जा रहा हूँ ।''

कथा कहती है कि कबीरजी सिर ले गये और धड़ उधर ही रह गया । भीड़ इकट्ठी हो गयी । लोगों ने कहा : ''देखो, ऐसा लगता है कि यह कबीरजी का पुत्र कमाल है ।'' उन लोगों ने धड़ को टांग दिया और कहा : ''हम सब मिलकर कीर्तन करते हैं । यदि कीर्तन सुनकर धड़ ताली बजाने लगे तो समझना कि यह कमाल ही है और कुछ न करे तो समझना कि किसी अज्ञानी का पुत्र है ।''

उन लोगों ने कीर्तन किया तो कमाल का धड़ तालियाँ बजाने लगा । लोग धड़ को लेकर गये कबीरजी के चरणों में और बोले :

''आप जो माल ले गये वह तो ठीक है । हम और भी पहुँचा देते हैं । अब हम सदा ही आपके श्रीचरणों में सीधा-सामान पहुँचाते रहेंगे । किन्तु यह ब्रह्महत्या का पाप हमारे सिर से हट जाये, ऐसी कृपा कीजिए ।''

कबीरजी ने धड़ से सिर लगा दिया और संकल्प करके पानी छींटा तो कमाल उठकर, खड़ा हो गया ।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

महारोग मिटाओ

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

रामनाम की औषधि खरी नियत से खाय ।
अंग रोग व्यापे नहीं, महारोग मिट जाय ॥

यह महारोग क्या है ? बार-बार जन्मना और मरना, यह महारोग है । तुलसीदासजी कहते हैं : ''जो आदमी सच्ची नियत से, सच्चे प्रेम से भगवन्नाम का जप, सुमिरन आदि करता है, उसका महारोग मिट जाता है ।''

''जब महारोग मिट गया तो फिर शरीर के रोग मिटे, न मिटे उसकी ज्यादा परवाह नहीं रहती है । फिर भी, **शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ।** शरीर धर्मकार्यों के सम्पादन का साधन है । शरीर को स्वस्थ रखना जरूरी है । जो आदमी शरीर को स्वस्थ रखने की कला जानता है वह बार-बार बीमारी का शिकार नहीं होता है । श्रीमद्भगवद्गीता में भी कहा गया है :

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥

'दुःखों का नाश करनेवाला योग तो यथायोग्य आहार-विहार करनेवाले को, कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करनेवाले को और यथायोग्य सोने तथा जागनेवाले को सिद्ध होता है ।'

(भगवद्गीता : ६.१७)

''जो आदमी सच्ची नियत से, सच्चे प्रेम से भगवन्नाम का जप, सुमिरन आदि करता है, उसका महारोग मिट जाता है ।''

जैसे वायर-फिटिंग तो पूरे मकान में की हुई होती है किन्तु स्विचबोर्ड तो दो-चार जगह पर ही होता है । वैसे ही पूरे शरीर का स्विचबोर्ड तुम्हारी हथेली और पैरों के तले में होता है, जिसका संबंध शरीर के विभिन्न अंगों से होता है ।

वातरोग के इक्यावन प्रकार हैं । उसमें से किसी भी प्रकार के वातरोग के लिये यह उपाय आजमाया जा सकता है : पहली उँगली (तर्जनी) हाथ के अंगूठे के आखिरी सिरे पर रखो और तीन उँगलियाँ सीधी रखो । ऐसा करके फिर बाँया नथुना बंद करके दाँये नथुने से खूब श्वास भरो । फिर जहाँ पर वातरोग का असर हो, उस अंग को हिलाओ-डुलाओ । चाहे घुटने का दर्द हो, चाहे कमर का दर्द हो, चाहे कहीं भी दर्द हो, उस भाग को हिलाओ । भरे हुए श्वास को आधा या पौना मिनट रोको, ज्यादा से ज्यादा एक मिनट रोको, फिर बाँये नथुने से निकाल दो । ऐसे दस-बार प्राणायाम करो तो दर्द में फायदा होता है ।

एलोपथी की दवाई रोग को दबाती है जबकि आसन, प्राणायाम, उपवास आदि रोग की जड़ निकालकर फेंक देते हैं । इन उपायों से जो फायदा होता है वह एलोपथी के केप्सूल इंजेक्शन आदि से नहीं होता है ।

एलोपथी की दवाई रोग को दबाती है जबकि आसन, प्राणायाम, उपवास आदि रोग की जड़ निकालकर फेंक देते हैं । इन उपायों से जो फायदा होता है वह एलोपथी के केप्सूल, इंजेक्शन आदि से नहीं होता है ।

प्राणायाम के अलावा एक उपाय और है लहसून के उपयोग का । लहसून के तीन टुकड़े करो । सुबह खाली पेट एक टुकड़ा मुँह में डालकर जरा-सा दबा दो और पानी का घूँट पी लो । फिर दूसरा टुकड़ा ऐसे ही ले लो और तीसरा टुकड़ा अपने पर से उतारकर फेंक दो । बाद

में एक-एक करके तीन टुकड़े लो । शरीर भारी हो और सर्दी के दिन हों तो एक आध लहसून भी ले सकते हैं । अगर गुरुमंत्र लिया हुआ है ऐसा साधक स्वास्थ्य के मंत्र की एक-दो माला जपे और यह प्रयोग करे तो इस रोग में अवश्य फायदा होता है । कइयों को हुआ है ।

इक्यावन प्रकार की वात रोग की बीमारी होती है : संधिवात, गठिया वात, आमवात आदि । उसमें बावनवाँ प्रकार जोड़ दो 'बावा' । साधु को बावा भी बोलते हैं । अगर इक्यावन प्रकार के वात में से किसी भी प्रकार का वात हो उसके साथ यह बावनवें प्रकार 'बावा' की बात भी आ जाय जीवन में, सत्संग मिल जाय, उनका ज्ञान मिल जाय तो इक्यावन प्रकार के 'वात' तो क्या कोई भी रोग हो वह भाग जाता है । यह बात तो सीधी सादी लगती है पर काम बहुत बड़ा करती है ।

दयाराम सूरत आश्रम में 'मामा' के नाम से प्रसिद्ध है । उसकी बहू को कुछ बीमारी हो गई। डॉक्टरों ने बताया कि हजार-हजार डॉलर के तीन इंजेक्शन लगवाओ । हजार डॉलर याने लगभग पैंतीस हजार रूपये, तीन इंजेक्शन के करीब लाख रूपये हो जायें । दूसरा जो खर्च हो वह अलग और ऐसे इंजेक्शन लगवाने के बाद भी फायदा हो तो हो कोई गेरंटी नहीं । अगर रीएक्शन हो जाए तो मर भी सकती है, डॉक्टर कह नहीं सकते क्या होगा ।

उन लोगों को संतों में श्रद्धा थी, बावा की बात वे मानते थे । ऐसे किसी संत ने उसे मंत्र दिया । मंत्र भगवान पर पूरा भरोसा रखकर मंत्र-जाप किया तो बीमारी गायब हो गई और एकदम फायदा हो गया । ऐसी होती है 'बावा' की बात जो तन के रोग तो मिटाती ही है साथ ही मनके रोग भी मिटाती है ।

संत ने उसे मंत्र दिया । मंत्र भगवान पर भरोसा रखकर मंत्र-जाप किया तो बीमारी गायब हो गई और एकदम फायदा हो गया । ऐसी होती है 'बावा' की बात जो तन के रोग तो मिटाती ही है साथ ही मन के रोग भी मिटाती है ।

जिसका मन रुग्ण होता है उसके मन में कोई न कोई फरियाद उठती रहती है । कई लोग 'रात को नींद नहीं आती है' ऐसी फरियाद करते हैं । उन लोगों को चाहिए कि रात को सोते समय लम्बा श्वास लेकर जितना लम्बा हो सके उतना 'हरि ॐ...' का गुँजन करें । पहले तो सिर्फ 'ओ' ही बोलना है । कुछ दिनों के बाद भीतर से 'म' अपने आप जुड़ जाएगा । दस मिनट तक ऐसा करें । नींद नहीं आती है ऐसा मत सोचें । नींद आती है ऐसा भी मत सोचें । 'मैं भगवान का हूँ और भगवान मेरे हैं... परमात्मा मेरे हैं' ऐसा चिंतन करते-करते लेट जायें । नींद अपने-आप आ जाएगी । जिसको नींद नहीं आती है, उसको इस उपाय से नींद आने लगेगी और जिसको ज्यादा नींद आती होगी उसकी नींद सीमित हो जाएगी । जिसको नींद में स्वप्न आते हैं वे बंद हो जाएँगे । जिसको चिंताएँ अधिक रहती हैं उनकी चिंताएँ दूर हो जाएँगी ।

प्रसन्नता बनाये रखने का और बढ़ाने का एक सरल उपाय यह है कि सुबह अपने कमरे में बैठकर जोर से हँसो । भले झूठ-मूठ में भी हँसो । ऐसा करते-करते सच्ची हँसी भी आ जाएगी । उससे शरीर में रक्तसंचरण अच्छा होगा ।

हररोज रात को सोते समय अगर आप ऐसा करके सोते हैं तो सारी रात पवित्र ॐ कार के पवित्र आंदोलन में आपका तन-मन सराबोर रहेगा । आपके शरीर की नस-नाड़ियों पर ॐ कार के गुँजन का सूक्ष्म असर रहेगा । रात भर नींद भी हो जाएगी और बंदगी भी हो जाएगी ।

सुबह जब उठो तब शरीर को दो-तीन मिनट खूब

खींचो । फिर दो-तीन मिनट के लिए ढीला छोड़ो । ऐसा दो-चार बार करके फिर बिस्तर में बैठकर आत्मचिंतन करो : 'मैं पाँच भूतों से बना हुआ शरीर नहीं हूँ । मैं सच्चिदानंद-स्वरूप आत्मा हूँ ।

प्रातःस्मरामि हृदिसंस्फुरदात्मतत्त्वम् ।
सच्चित्सुखं परमहंसगतिं तुरीयम् ॥
यत्स्वप्नजाग्रतसुषुप्तमवैति नित्यम् ।
तद्ब्रह्म निष्कलमहं न च भूतसंघः ॥

'मैं सवेरे हृदय में संस्फुरित उस आत्मतत्त्व का स्मरण करता हूँ जो सच्चिदानंदरूप है, परमहंसों की गति है, तुरीय है, जो स्वप्न, जाग्रत, सुषुप्ति को जाननेवाला है, नित्य है । वही निष्कल ब्रह्म मैं हूँ, पंचमहाभूतों का संघ मैं नहीं हूँ ।'

शुद्ध आचरणवाले उत्तम कोटि के साधक अगर दिन में हर एक आध घंटे में इस भाव को दोहराते जायें और अपने आनंद-स्वभाव को जगाते जायें तो घर में भी कलह, झगड़े, बीमारी आदि आसानी से मिटते जायेंगे । फिर भी कलह, झगड़े हो तो अंतर्यामी गुरु से तादात्म्य करके मंत्रजप करो और फिर थोड़ा भीतर आत्मशांति में गोता लगाओ तो कलह, झगड़े का कारण समझ में आ जाएगा और उपाय भी अपने आप सूझेगा । भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है :

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते ।
प्रसन्नचेतसो ह्याशुः बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥

'अंतःकरण की प्रसन्नता होने पर इसके संपूर्ण दुःखों का अभाव हो जाता है और उस प्रसन्न चित्तवाले कर्मयोगी की बुद्धि शीघ्र ही सब ओर से हटकर एक परमात्मा में ही भलीभाँति स्थिर हो जाती है ।'

प्रसन्नता बनाये रखने का और बढ़ाने का एक सरल उपाय यह है कि सुबह अपने कमरे में बैठकर जोर से हँसो । आज तक जो सुख-दुःख आया वह बीत गया और जो सुख-दुःख आएगा वह बीत जाएगा । जो होगा, देखा जाएगा । आज तो मौज में रहो । भले झूठ-मूठ में भी हँसो । ऐसा करते-करते सच्ची हँसी भी आ जाएगी । उससे शरीर में रक्तसंचरण (ब्लड सरक्यूलेशन) अच्छा होगा । शरीर तंदुरुस्त रहेगा । बीमारियाँ नहीं सतायेगी और दिनभर खुश रहोगे तो समस्याएँ भी भाग जाएँगी या तो आसानी से हल हो जाएँगी । व्यवहार में चाहे कैसे भी सुख-दुःख, हानि-लाभ, मान-अपमान के प्रसंग आएँ पर आप उनसे विचलित हुए बिना चित्त की समता बनाए रखोगे तो आपके अपने आनंदप्रद स्वभाव को जगाने में देर नहीं लगेगी क्योंकि चित्त की विश्रांति प्रसाद की जननी है ।

आप जितना-जितना मान-अपमान, सुख-दुःख को पचाते जाओगे और अन्दर आनंद को जगाते जाओगे उतना-उतना अपने आनंद-स्वरूप आत्मा से अपनी एकता का अनुभव आपको होता जाएगा ।

रज्जब रोष न कीजिए
कोई कहे क्यों ही ।
हँसकर उत्तर दीजिए
हाँ बाबाजी यों ही ॥

आप जितना-जितना मान-अपमान, सुख-दुःख को पचाते जाओगे और अन्दर आनंद को जगाते जाओगे उतना-उतना अपने आनंदस्वरूप आत्मा से अपनी एकता का अनुभव आपको होता जाएगा । आप इस अनुभव में पूर्ण रूप से स्थित हो जाओगे तो आपका महारोग मिट जाएगा । आप जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त हो जाओगे । रोम-रोम में रम रहा है सच्चिदानन्दघन ब्रह्म...

राम... राम... राम...

(पृष्ठ १३ का शेष)

ऐसी किसी घटना के लिए कबीरजी की कोई योजना नहीं थी फिर भी सहज में हो गया । संतों के द्वारा जो कुछ होता है वह सहज में होता है और जो होता है उसमें अनेकों की भलाई निहित होती है । जाने-अनजाने भी उनसे लोकहित के कार्य होते रहते हैं । फिर वे चाहे सामान्य रूप से हों, चाहे चमत्कार के रूप में । किन्तु उनका जीवन बीतता है परहित में ही ।

ग्रीष्म ऋतु में सावधानियाँ

ग्रीष्म ऋतु में आहार-विहार उचित करें। लापरवाही न बरतें। आवश्यकता से अधिक भोजन न करें और भोजन के तुरंत बाद पानी न पियें। बासी एवं दूषित पदार्थों का सेवन न करें।

जिनकी पाचनशक्ति कमजोर होने के कारण अपच व कब्ज रहती है उन्हें कुछ दिनों तक शाम को सिर्फ छिलकेवाली मूंग की दाल व चावल की खिचड़ी ही आहार के रूप में लेना चाहिये। भोजनोपरांत शाम को शुद्ध वातावरण में थोड़ा टहलना चाहिये जिससे पाचनक्रिया सुचारु रूप से होती है। जिनकी पाचनशक्ति मंद है और वे शाम को गरिष्ठ, भारी, देरी से पचनेवाला भोजन करते हैं तो उन्हें कब्ज, गैस, एसिडिटी जैसी बीमारियाँ घेर लेती हैं। इसलिये पाचनशक्ति अनुसार, ऋतु के अनुकूल, यथायोग्य आहार-विहार करें और स्वस्थ रहें।

दोपहर की कड़ी धूप ज्ञानतंतुओं पर हानिकारक प्रभाव डालती है। यदि आवश्यक कार्य से धूप में निकलना ही पड़े तो कोई कपड़े, टोपी, पगड़ी या छतरी से सिर का बचाव करें ताकि लू से बचाव हो सके।

दोपहर बाद शर्बत, नीबू की मीठी शिकंजी, ठण्डाई या फलों का रस ले सकते हैं। मीठी लस्सी भी लाभकारी है।

सौंफ

गुण : सौंफ ज्वर, वात, कफ, घाव, दर्द का शमन करनेवाली, तीक्ष्ण, पित्तकारक तथा नेत्रों के लिये हितकारी है। रुचिकर, मधुर रस से युक्त, शीतवीर्य और स्निग्ध है। यह दाह और रक्तपित्त को नष्ट करनेवाली है। इसका अर्क रुचि बढ़ानेवाला, जठराग्नि तेज करनेवाला, चरपरा, शीतल, पाचक, मधुर और प्यास, उल्टी, जी मिचलाना, पित्त व दाह को नष्ट करनेवाला है। इसका सेवन करने से त्वचा का रंग साफ होता है।

मस्तिष्क की शीतलता के लिये : सौंफ, मिश्री और छोटी इलायची के दाने, तीनों को समभाग में लेकर बारीक चूर्ण करें। सुबह-शाम १-१ चम्मच चूर्ण पानी या दूध के साथ सेवन करने से शरीर और मस्तिष्क में ताजगी व तरावट रहती है।

घमौरियाँ : ग्रीष्म ऋतु में प्रायः पीठ के ऊपर घमौरियाँ (छोटी-छोटी फुन्सियाँ) हो जाती हैं। ५० ग्राम सौंफ कूटकर पानी से भरे बर्तन में डाल दें व प्रातः इसी पानी से स्नान करें व सौंफ को पानी में पीसकर लेप बनाकर पीठ पर लगाने से घमौरियाँ शीघ्र ही ठीक होती हैं।

नेत्रज्योति : सौंफ व मिश्री १-१ चम्मच सोते समय फांककर खाने से नेत्रज्योति बढ़ती है। ५-६ माह इसका नियमित सेवन करना चाहिये।

कब्ज : एक चम्मच सौंफ का चूर्ण और २-३ चम्मच गुलकन्द प्रतिदिन दोपहर के भोजन के कुछ समय पश्चात् लेने से कब्ज दूर होने में सहायता मिलती है।

त्वचा की कांति के लिये : १०-१० ग्राम सौंफ सुबह-शाम खूब चबा-चबाकर नियमित रूप से खाने से त्वचा कांतिमय बनती है। गर्भवती स्त्री यदि पूरे गर्भकाल में सौंफ का सेवन करे तो शिशु गोरे रंग का होता है। साथ ही जी मिचलाना, उल्टी होना, अरुचि जैसी शिकायतें नहीं होती। रक्त शुद्ध होता है।

५० ग्राम सौंफ लेकर थोड़ा कूट लें। एक गिलास उबलते हुए पानी में डालें व उतार लें और ढँककर ठण्डा होने के लिये रख देवें। ठण्डा होने पर मसलकर छान लेवें। यह सौंफ का १ चम्मच पानी १-२ चम्मच दूध में मिलाकर दिन में ३ बार शिशु को पिलाने से शिशु को पेट फूलना, दस्त, अपच, मरोड़, पेटदर्द होना आदि उदरविकार नहीं होते हैं। दाँत निकलते समय यह सौंफ का पानी शिशु को अवश्य पिलाना चाहिये जिससे शिशु स्वस्थ रहता है।

संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित विद्यार्थियों के लिये राहत दर से

प्रेरणादायी नोटबुक

समस्त विद्यार्थियों, अभिभावकों, शालाओं के आचार्य एवं शिक्षक भाइयों, छात्रालयों के अधीक्षकों, श्री योग वेदान्त सेवा समिति के सदस्यों तथा 'ऋषि प्रसाद' के सेवाभावी एजेन्ट भाइयों एवं स्नेही पाठकों को अत्यधिक हर्ष के साथ स्मरण कराया जाता है कि प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी पूज्य बापू के पावन संदेशों से युक्त पृष्ठों तथा विभिन्न प्रेरणादायी रंगीन चित्रों से आकर्षक डिजाइनों में, लेमिनेशन से सुसज्ज मुख्य पृष्ठों से युक्त सुपर डीलक्स क्वालिटी के कागज पर निर्मित की गई, विद्यार्थियों के लिये प्रत्येक पृष्ठ पर दिव्य जीवन के लिये प्रेरणा, शौर्य, साहस, उत्साह एवं अनुपम शक्ति का संचार करने में सहायक हिन्दी तथा गुजराती भाषा में सुवाक्यों से युक्त नोटबुक एवं १०० और २०० पृष्ठवाली सुपर डीलक्स फुलस्केप नोटबुक (Long Note Book) का वितरण चालू हो गया है ।

अपने-अपने क्षेत्रों में विद्यार्थी भाई-बहनों को इन प्रेरणादायी राहत दर की नोटबुकों (कापियों) का अधिक से अधिक मात्रा में लाभ मिल सके, इस हेतु एडवान्स बुकिंग करवाने तथा माल प्राप्त करने के लिये तुरन्त सम्पर्क करें :

श्री योग वेदान्त सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५
फोन : ७४८६३१०, ७४८६७०२.

नोट : संस्थाओं को थोक खरीदी करने के लिये अपना लेटरहेड अहमदाबाद आश्रम में प्रस्तुत करना अनिवार्य है । माल स्टॉक में होगा तब तक मिलेगा ।

'ऋषि प्रसाद' के सदस्यों एवं एजेन्ट बन्धुओं से अनुरोध

(१) कृपया ध्यान दें : गत अंक ४० से द्विमासिक संस्करण का सदस्य शुल्क लेना बंद किया गया है । 'ऋषि प्रसाद' की सदस्यता के लिए नये सदस्यता शुल्क के अनुसार भेजे गये मनीऑर्डर/ड्राफ्ट ही स्वीकार किये जाएँगे, पुरानी दर के नहीं । सदस्यता शुल्क के नये दर इस प्रकार हैं : भारत, नेपाल व भूटान में **वार्षिक :** रू. ५०. **आजीवन :** रू. ५००

(२) अपनी सदस्यता का नवीनीकरण कराते समय मनीऑर्डर फार्म पर 'संदेश के स्थान' पर 'ऋषि प्रसाद' के लिफाफे पर आया हुआ आपके पते वाला लेबल चिपका दें । (३) 'पाने वाले का पता' में 'ऋषि प्रसाद सदस्यता हेतु' अवश्य लिखें । (४) पते में किसी भी प्रकार के परिवर्तन की सूचना प्रकाशन तिथि से एक माह पूर्व भिजवावें अन्यथा परिवर्तन अगले अंक से प्रभावी होगा । (५) जिन सदस्यों को पोस्ट द्वारा अंक मिलता है उनको विनंती है कि अगर आपको अंक समय पर प्राप्त न हो तो पहले अपनी नजदीकवाली पोस्ट ऑफिस में ही पूछताछ करें । क्योंकि अहमदाबाद कार्यालय से सभी को समय पर ही अंक पोस्ट किये जाते हैं । पोस्ट ऑफिस में तलास करने पर भी अंक न मिले तो उस महीने की २० तारीख के बाद अहमदाबाद कार्यालय को जानकारी दें । (६) 'ऋषि प्रसाद' कार्यालय से पत्रव्यवहार करते समय कार्यालय के पते के ऊपर के स्थान में संबंधित विभाग का नाम अवश्य लिखें । ये विभिन्न विभाग इस प्रकार हैं :

(A) अनुभव, गीत, कविता, भजन, संस्था समाचार, फोटोग्राफ्स एवं अन्य प्रकाशन योग्य सामग्री 'सम्पादक-ऋषि प्रसाद' के पते पर प्रेषित करें । **(B)** पत्रिका न मिलने तथा पते में परिवर्तन हेतु 'व्यवस्थापक-ऋषि प्रसाद' के पते पर संपर्क करें । **(C)** साहित्य, चूर्ण, कैसेट आदि प्राप्ति हेतु 'श्री योग वेदान्त सेवा समिति के पते पर संपर्क करें । **(D)** साधना संबंधी मार्गदर्शन हेतु 'साधक विभाग' पर लिखें । **(E)** स्थानीय समिति की मासिक रिपोर्ट, सत्प्रवृत्ति संचालन की जानकारी एवं समिति से संबंधित समस्त कार्यों के लिये 'अखिल भारतीय योग वेदान्त सेवा समिति' के पते पर लिखें । **(F)** स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्त प्रकार के पत्रव्यवहार 'वैद्यराज, सांई लीलाशाहजी उपचार केन्द्र, संत श्री आसारामजी आश्रम, वरीयाव रोड़, जहाँगीरपुरा, सूरत (गुजरात) के पते पर करें । (७) आप जो राशि भेजें वह इन विभागों के मुताबिक अलग-अलग मनीऑर्डर या ड्राफ्ट से ही भेजें । अलग-अलग विभाग की राशि एक ही मनीऑर्डर या ड्राफ्ट में कभी न भेजें ।

मृत पुत्र की देह में प्राणों का संचार

दिसम्बर १९९५ में पूज्य बापू के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होनेवाली दिव्य ज्ञानगंगा में अवगाहन करने का सौभाग्य मुझे भुसावल में प्राप्त हुआ। यद्यपि नौकरी भी ऐसी है कि एक दिन का भी अवकाश नहीं मिल रहा था सत्संग-सरिता में डुबकी लगाकर अपने मनोमालिन्य को निवृत्त करने का। तथापि अनेक जन्मों के पुण्यों ने जोर मारा और 'कुछ भी हो जाय, आज मुझे पूज्य बापू के दर्शनार्थ जाना ही है'- यह ठानकर मैं एक दिन सत्संग-स्थल पर पहुँच ही गया।

तापी के तट पर जनता-जनार्दन का विशाल महासागर और हर किसीके मन में उठती भक्ति की लहरें देखकर आश्चर्यचकित हो गया! कलियुग में इन संत का कितना प्रभाव है कि इनके सम्पर्क में आते ही नश्वर संसार की विस्मृति और शाश्वत आत्मा-परमात्मा-ईश्वर की स्मृति सहज ही होने लगती है! हजारों श्रोताओं से भरा सभा-मंडप... फिर भी सर्वत्र शांति... सभी प्रेमाभक्ति में निमग्न होकर किसी सामूहिक पाठ में संलग्न हैं... इतने में व्यासपीठ पर धवलवस्त्रधारी, आकर्षक व्यक्तित्व के धनी और आध्यात्मिक तेज के दिवाकर परम पूज्य बापू का शुभागमन होता है... सम्मान में श्रद्धालूगण एक साथ उठकर पूज्य बापू को सश्रद्ध नमन करते हैं।

मेरे जीवन का परम सौभाग्य, जब उस दिन मुझे पूज्य बापूजी के प्रत्यक्ष दर्शन हुए। पूज्यश्री के प्रथम दर्शन से ही मेरे अंत:करण में कुछ अजीब-सी आनन्दमयी हलचल होने लगी। मुझे ऐसा लग रहा था मानो मैं बापू के नहीं, प्रत्यक्ष भगवान राम व श्रीकृष्ण के दर्शन कर रहा हूँ। पूज्य बापू की पीयूषवाणी का आचमन कर उस दिन तो ऐसा लगा मानो कई युगों से सड़ता-पड़ता आ रहा यह जीव और देह गुरुदेव के दैदीप्यमान दर्शन और उपदेशामृत की वृष्टि में स्नान कर कंचन-सा हो गया है।

पूज्य बापू के उस दिन के सत्संग समारोह में मुझे 'हरि' नाम की महिमा सुनने को मिली और मिला पूज्यश्री से इस शब्द के पीछे छुपे अति सूक्ष्म रहस्यों का वैज्ञानिक विश्लेषण। बस, मुझे तो लगा कि मुझे गुरुमंत्र ही मिल गया है। तब से लेकर आज तक सुबह हो या शाम या नौकरी-पेशे का काम हो- मेरे मन में 'हरिॐ... हरिॐ...' के रटन की एक धारा चल पड़ी। ऐसा प्रतीत होने लगा कि इस एक दिन के सत्संग में ही मुझे हीरे-मोती की खान मिल गई और यह इच्छा पैदा हुई कि पूज्य बापू को सद्गुरु बनाकर सदा के लिये उनका हो जाऊँ। यह सौभाग्य मुझे मेरी मृत्यु के पूर्व ही प्राप्त होना चाहिये।

मकर संक्रांति के दिन मैंने तापी में स्नान किया और भगवान भास्कर की इस पुत्री से प्रार्थना की कि : 'माताजी! पूज्य बापूजी को मेरा संदेशा देना कि मैंने उन्हें सद्गुरु मान लिया है।'

दिनांक २५ जनवरी १९९६ के दिन मैं, मेरे दो पुत्र और एक पुत्री, चारों बीमार हो गये। छोटा लड़का तो अत्यधिक गंभीर अवस्था में पहुँच गया। दूसरे दिन सुबह तो मेरी पत्नी रोते-रोते मेरे पास आई और मेरी गोद में उस लड़के को रखकर दहाड़ मारकर रोने लगी। मैंने घबराकर बेटे की नब्ज, नाक व हृदय की धड़कन टटोली। अरे! यह क्या... ? उसके प्राण तो इस देह को त्याग चुके थे। मैंने उसकी मृत देह को छाती से लगा लिया और पुस्तक पर छपी बापू

की तस्वीर पर मेरी नजरें जम गईं और मेरा दिल अचानक रो पड़ा । मैं करुण पुकार करने लगा : 'हे मेरे प्रभु ! आसारामजी बापू !! मेरे नाथ !!! आपकी छत्रछाया में पलते हुए मेरे इस बच्चे ने दम तोड़ दिया भगवान ...! मेरे बच्चे को बचा लीजिये बापू... मेरे बच्चे को बचा लीजिये ।' ऐसी प्रार्थना बार-बार दोहराते हुए मैं आर्त्तभाव से रोने लगा तो महान् आश्चर्य...! कुछ ही देर बाद मेरे छोटे लड़के की मृत देह में चेतना का संचार हुआ और वह भी 'बापू... बापू... बापू...' की पुकार करने लगा ।

अनेक लोग जो मेरे पुत्र की मृत्यु की सूचना पाकर हमें सान्त्वना देने आये थे, इस घटना के प्रत्यक्षदर्शी हैं । वे भी सब भावविभोर हो गये और पूज्य बापू के पावन चित्र के सम्मुख नत होकर कृतज्ञता ज्ञापन करने लगे । मेरा पुत्र मेरी गोद से उठा और जमीन पर खेलने लगा । मैं रोते हुए भीड़ को बताने लगा कि देखो... देखो... मेरे बापू का कमाल ! मेरे प्रभु का कमाल ! मेरे नाथ का चमत्कार !

गुरुदेव के पावन चरणों में मेरी बिनती है कि जिस तरह से अपनी असीम कृपा का कौर थमाते हुए मुझे धन्य-धन्य किया है, हे मेरे मसीहा ! मुझसे अपनी कृपा का वह दामन कभी भी न छूटने देना ।

- मधुकर संभाजी मेढे
मु. पो. असोदा (भंगीवाड़ा), ता. जि. जलगाँव

कोई आपका अपमान या निन्दा करे तो परवाह मत करो । ईश्वर को धन्यवाद दो कि तुम्हारा देहाध्यास तोड़ने के लिए उसने उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया है । अपमान से खिन्न मत बनो, बल्कि उस अवसर को साधना बना लो । अपमान या निन्दा करनेवाले आपका जितना हित करते हैं, उतना प्रशंसक नहीं करते- यह सदैव याद रखो ।

नाम अमर कर पाते हैं

आश्चर्यकारी घटनाओं से
प्रिय दर्शन के जो भाव खिले ।
सद्गुरुदेव के शुभाशीष से
शब्द शब्द का योग मिले ॥
बिखर-बिखर तृण-तृण जैसे
शक्तिहीन हो जाते हैं ।
बिखरे हुए माला के मोती
कोई कदर ना पाते हैं ॥
याद रखो बेटा ! जीवन में
ना कोई ऐसा कर्म करो ।
ऊँचा उठे अब जीवन अपना
ऐसे मन में भाव करो ॥
एक बेटा जन्मता ऐसा
जग विख्याति पा लेता ।
एक कपूत जन्मता ऐसा
पिता का नाम डुबो देता ॥
सबके जीवन में एक बार ऐसे
पावन प्रसंग आ जाते हैं ।
जो आलस्य व प्रमाद छोड़ते
वे ही नाम अमर कर पाते हैं ॥
संगठन में है शक्ति भारी
सद्गुरु का फरमान यही ।
संगठित होकर हम भी किसीसे
हार सकेंगे कभी नहीं ॥

साधना की शुरूआत श्रद्धा से होती है लेकिन समाप्ति ज्ञान से होनी चाहिये । ज्ञान माने स्वयं सहित सर्व ब्रह्मस्वरूप है ऐसा अपरोक्ष अनुभव ।

संस्था समाचार

संत श्री आसारामजी जन्मोत्सव १९९६

आध्यात्मिक इतिहास के पन्नों पर अविस्मरणीय प्रसंग

संत श्री आसारामजी बापू का ५५ वाँ जन्मदिवस रतलाम व इससे जुड़े सैकड़ों ग्रामीण अंचलों में ९ अप्रैल ९६ को प्रात: सूर्योदय से पूर्व से लेकर अर्धरात्रि तक 'साँई प्रागट्य महोत्सव' के रूप में साधक परिवार द्वारा तन, मन और धन से श्रद्धापूर्वक मनाया गया । महोत्सव का प्रथम आकर्षण था- जन्मदिवस की पूर्व संध्या पर शहर में संत श्री आसारामजी सत्संग मण्डल व श्री योग वेदान्त सेवा समिति, रतलाम द्वारा निकाली गयी अविस्मरणीय संकीर्तन यात्रा । यह संध्यायात्रा अपने-आप में एक हरिनाम की घर बैठे आयी वह गंगा थी, जिसमें हर जाति, वर्ग और सम्प्रदाय के श्रद्धालुओं ने भक्तिपूर्वक डुबकी लगायी । जब बापूजी के प्यारे सायंकाल झूमते-नाचते-गाते जा रहे थे तब ऐसा अनुभव हो रहा था कि संकीर्तन यात्रा में शरीक हर देह में पूज्यश्री की भक्ति का आनंद, हर्ष के रूप में ढोल की थाप पर नृत्य करता हुआ सारे वातावरण को उल्लासमय बना रहा है । किसीको न तो अपने पद का ध्यान था न ही देहाभिमान का । अहं की इस तुच्छ अवस्था को सैकड़ों मील पीछे छोड़कर बापूजी की सेवा में आगे आये श्रद्धालुओं के हृदय में तो मानो आज वैकुण्ठ का सुख छलक रहा था । कहा गया कि : ''आज जो इस यात्रा में आया उसने मानो जीवन-मृत्यु की यात्रा से भी आगे की यात्रा का मार्ग प्रशस्त कर लिया ।'' बच्चों की शक्ल में कृष्ण-कन्हैया की भाँति प्रसादी लुटे राधा-गोपाल भले ही संकीर्तनयात्रा में ट्रेक्टर-ट्राली पर सवार थे लेकिन उनकी मनोहारी छबि और प्रेममयी लीला आज भी, अभी भी शहरवासियों के हृदय पर उतनी ही ताजगी के साथ मौजूद है । संकीर्तन यात्रा में क्या तो साधक और क्या साधिकाएँ सभी हरिनाम, गुरुनाम संकीर्तन में मस्त थे । आतिश-बाजियों ने तो इस यात्रा में एक नये उमंग की आहट पैदा कर दी थी । प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है : इस तरह की आनंद लुटाती संकीर्तन यात्राएँ अक्सर अध्यात्म के इतिहास के पन्नों पर स्वर्णिम अक्षरों से अंकित हो जाया करती हैं ।

जन्मदिवस पर प्रात:काल से ही पंचेड़ स्थित आश्रम पर पूर्णत: उत्साहनुमा वातावरण था । भक्तों का क्रम आश्रम में दर्शन हेतु अनवरत संध्या तक जारी था । यद्यपि नियमित बससेवा के अतिरिक्त आश्रम पहुँचने के लिये कोई विशेष सुविधा नहीं है फिर भी जिसे जो साधन मिला उससे आ ही गया । आश्रम पर बाहर से कई साधक परिवार अपनी संस्कृति के अनुरूप बैण्ड-बाजे, ढोल-ढमाके के साथ संकीर्तन करते जन्म-महोत्सव में शरीक होने को ट्रेक्टर-ट्राली, जीप, टेम्पो, कार से पूज्यश्री को तस्वीर के रूप में विराजित कर लेकर आये । जन्म-महोत्सव के शुभारंभ में पूज्यश्री के मुकुट को साधक अपने शीष पर उठाकर व्यास भवन तक बैण्डबाजे के साथ जुलूस की शक्ल में लेकर आये और फिर तो व्यास-भवन में ऐसे ही उत्सव आरंभ हुआ, जैसे पूज्यश्री की उपस्थिति में होता है । आगन्तुक साधकों ने इतना सत्संग और सेवा का लाभ लिया कि वे अपने-आप को आज धन्य महसूस कर रहे थे । श्री आसारामायण पाठ, संकीर्तन, विडियो सत्संग, दिव्य आरती एवं प्रसाद ग्रहण इस मर्तबा भी महोत्सव के प्रमुख आकर्षण थे । मोक्षकुण्ड का उद्घाटन एक अविस्मरणीय प्रसंग के रूप में दर्ज हो चुका है । इस कुण्ड में डुबकी लगानेवालों को आज समस्त तीर्थों में स्नान करने का लाभ प्राप्त हुआ । विश्वशान्ति एवं जनकल्याण के पुनीत उद्देश्य को लेकर आश्रम में पवित्र मंत्रोच्चार के मध्य यज्ञ का आयोजन भी तड़के से ही आरंभ हो चुका था । इस तरह आश्रम में पूर्णत: भक्ति, श्रद्धा व उल्लास के वातावरण में प्रसाद-वितरण के पश्चात् महोत्सव की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई ।

यद्यपि आश्रम में पूज्यश्री के 'प्रागट्य महोत्सव' की पूर्णाहुति हो चुकी थी लेकिन सही अर्थों में देखा जाए तो महोत्सव का आरंभ रतलाम में शहर सराय स्थित सत्संग केन्द्र पर संध्या को आयोजित अभ्यागतों,

निराश्रितों तथा आदिवासियों को साधकों द्वारा अपने हाथों से भोजन कराने के दैवी कार्य से हुआ था। संक्षिप्त प्रचार के बावजूद भी आठ हजार के आसपास निराश्रितों ने सप्रेम भोजन ग्रहण कर, सेवा का अवसर सत्संग मण्डल को प्रदान कर सौभाग्यशाली होने का गौरव प्रदान किया। दरिद्रनारायणों को भोजन करवाते समय हरेक सेवाधारी पूरे परिश्रम से इस उद्देश्य के साथ उनकी सेवा में सलग्न था कि कहीं कोई भूखा न रह जाए। कहने को तो साधक अभ्यागतों को भोजन करवा रहे थे किन्तु उनका अनुभव था कि जो आत्मिक शान्ति उन्हें इस सेवा से सहज में प्राप्त हुई, वह स्वयं उनके जीवनभर छप्पनभोग खाने से भी नहीं प्राप्त हो सकती है। अपने-आप में यह एक आयोजन अनूठा था। लगभग पाँच घण्टे तक चले इस आयोजन में ज्यों-ज्यों समय गुजरता गया त्यों-त्यों साधकों में सेवा का उत्साह दुगना होता गया। हर चेहरे पर सुकुन की रंगत थी। बताया जाता है कि हजारों की तादाद में भोजन कराने के बाद भी भोजन-सामग्री में कोई कमी नहीं आयी बल्कि बाद में दो-चार दिन तक प्रसादी बाँटी गयी।

इस दैनिक कार्य की अभूतपूर्व सफलता को देख सत्संग मण्डल ने इस आयोजन को प्रतिवर्ष एक नियमित आयोजन का स्वरूप प्रदान कर दिया है।

कुल मिलाकर पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू का 'प्रागट्य महोत्सव' आध्यात्मिक जगत के पन्नों पर उन स्वर्णिम अक्षरों से अंकित हो गया है, जिन्हें जब भी कभी पढ़ा जाएगा तो सेवा, समर्पण, साधना और विशेषतः साधकों के हृदय में छलके गुरुभक्ति प्रेमामृत की स्मृति पुनः तरोताजा हो जाएगी।

शिर्डी : देश-विदेश में लाखों नर-नारियों को हरिरस का रसास्वादन करानेवाले, हजारों हताश-निराश हृदयों को आशा-उत्साह, साहस और संयम से भर देनेवाले, जीवन के सर्वांगीण विकास की युक्तियाँ सत्संग और साधना के द्वारा सहज में सिखा देनेवाले ब्रह्मनिष्ठ संत श्री आसारामजी बापू की दिव्य ज्ञान सत्संग-वर्षा का लाभ अप्रैल की दिनांक : २५ शाम से २८ तक पाकर महाराष्ट्र क्षेत्र की प्रसिद्ध नगरी शिर्डी व आसपास के समीपवर्ती गाँवों की धर्मप्रेमी जनता धन्य धन्य हुई। यहाँ के भाविक भक्तजनों से यह भी कहते सुना गया कि शिर्डी में अनेक सत्संग-समारोह होते रहे हैं किन्तु किन्हीं स्वात्मानुभव से तृप्त महापुरुषों के सत्प्रवचनों व दर्शन के लिये वर्षों से व्याकुल इस क्षेत्र की जनता इन महापुरुष के आगमन व इनके वचनामृतों से संतृप्त हुई है। इस चार दिन की दिव्य ज्ञान सत्संग वर्षा के दौरान *संतशिरोमणि पूज्य बापूजी ने कहा कि :*

"जीवन में सत्संग की बहुत जरूरत है। मनुष्य जन्म पाकर जिसने सत्संग का सहारा नहीं लिया उसके पास भले विद्याबल हो, शरीरबल हो, बाहूबल हो, धनबल हो, यशबल हो लेकिन अंत में मौत उसको निर्बल बना देती है। अतः मौत आकर निर्बल बनाये उसके पहले बलवानों का बल जो भगवान है उसकी प्रेमाभक्ति जो अपने हृदय में प्रगटा लेता है वही बड़भागी है।"

पूज्यश्री ने कहा कि : *"ईश्वर-प्राप्ति अथवा शान्ति-प्राप्ति कोई कठिन नहीं है। केवल जो मिथ्या है, जो बदलनेवाला है उसको भीतर से 'मैं-मेरा' मानना छोड़ दो और जो सत्य आत्मा है उसको 'मैं' मानने को तैयार हो जाओ।*

जहाँ से 'मैं' स्फुरित होता है वह आत्मा सत्य है और 'मेरा' जो मान रखा है वह मिथ्या है। 'मेरा मन...मेरी बुद्धि... मेरा चित्त...' ये जो 'मेरा-मेरा' बोलने की जहाँ से सत्ता मिलती है वह 'मैं' चैतन्य हूँ' उसमें आराम पाने की कला सीख जाओ तो बेड़ा पार हो जायेगा।"

नाशिक : पुण्यसलिला माँ गोदावरी के तट पर स्थित संत श्री आसारामजी आश्रम में दिनांक : २९ अप्रैल की शाम को शहर व समीपवर्ती गाँवों की दर्शन व सत्संग की प्यासी जनता ने अगम-निगम के औलिया पूज्य बापू के दर्शन व उनकी अमृतवाणी का रसपान कर अपने को धन्य-धन्य किया। पूज्य बापू के दर्शनों व उनके मुखारविन्द से प्रस्फुटित ज्ञान की शीतल धारा में सराबोर होने के लिये नाशिक क्षेत्र की जनता आश्रम की ओर ऐसी तो अपार भीड़ के साथ उमड़ी कि शाम को आश्रम का काफी बड़ा विस्तार सत्संग-

श्रवणार्थ आये हुए भक्तजनों से पूरित हो चुका था। दोपहर की कड़ी धूप को सहन करते हुए भी भक्तजनों का समूह आश्रम में आने के लिये शुरू हो गया था। धन्य हैं वे लोग जो ऐसे महापुरुषों के आगमन की मौखिक सूचना मिलने पर उनके दर्शन-सत्संग में पावन होने को हजारों की संख्या में पहुँच जाते हैं।

सूरत : सूर्यपुत्री तापी के तट पर स्थित संत श्री आसारामजी आश्रम में दिनांक २ से ५ मई तक विद्यार्थी व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन हुआ जिसमें विभिन्न ग्रामों, शहरों व प्रांतों से आये हुए हजारों सुकुमारों व सुकुमारियों ने पूज्यश्री की शक्तिपात-वर्षा एवं उनके मुखारविन्द से प्रस्फुटित अलौकिक कुँजियों को ग्रहण कर अपना जीवन धन्य किया। स्मृति, सदाचार, साहस, आत्मशांति तथा शरीर सुदृढ़ बनाने की सुन्दर बातें, प्रेरणा व प्रयोग संप्राप्त किये। शिविर के दौरान बालयोगी पू. नारायण स्वामी ने भी बच्चों को प्रायोगिक अनुभव के साथ सद्गुण व सद्विचार से युक्त मधुर वाणी से लाभान्वित किया। उन्होंने कहा कि ***सत्संग से शांति मिलती है। शांति सामर्थ्य की जननी है।*** उन्होंने कहा कि ***मनुष्य में बड़ी से बड़ी कमी है कि किसी कार्य में असफलता मिलने पर वह निराश हो जाता है और सफलता मिलने पर अहंकार आ जाता है। असफलता में निराश न हो। सफलता में अहंकार से फूलो नहीं। ऐसा तभी हो सकता है जब जीवन में सत्संग होगा।*** उन्होंने कहा कि ***जिसके अन्दर सद्गुण निवास करते हैं वह मनुष्य संसार में सर्वश्रेष्ठ है। सद्गुणों की संपदा बड़ी से बड़ी संपदा है।***

बड़भागी हैं इन बच्चों के माता-पिता जो अपने बाल-गोपाल को इस सत्पथ पर अग्रसर होने के लिये ऐसे आत्मनिष्ठ संतों के सान्निध्य में आयोजित ध्यान योग शिविरों में भाग लेने हेतु भेजते हैं व खुद भी उनके प्रेरणादायी उद्गारों से अपने को संतृप्त करते हैं।

अहमदाबाद : मध्य प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, महाराष्ट्र आदि प्रांतों में लाखों लाखों लोगों को अपनी पीयूषवर्षी वाणी का अमृतपान कराने के बाद पूज्य बापू दिनांक ८ मई को अहमदाबाद आश्रम पहुँचे, जहाँ दिनांक १२ मई को साबरमती नदी के तट पर स्थित आश्रम के पवित्र वातावरण में हजारों-हजारों साधकों ने, भक्तजनों ने पूज्य बापू के अमृतवचनों का लाभ लिया।

स्थान-स्थान पर पू. बापू का जन्मोत्सव मनाया गया...

जलगाँव में : जलगाँव (महाराष्ट्र) में स्थानीय योग वेदांत सेवा समिति द्वारा पूज्य बापू का जन्मदिवस बड़े उत्साह व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रातः ६ बजे संकीर्तन यात्रा निकाली गई। इस संकीर्तन यात्रा में काफी संख्या में एकत्रित साधक-साधिकाओं, भक्तगण, और बालक-बालिकाओं के 'हरि ॐ... हरि ॐ...' के उच्चार से सम्पूर्ण परिसर भक्तिमय हो गया था। विभिन्न स्थानों से होकर पुनः उसी स्थान पर पूज्य बापू की आरती उतारकर संकीर्तन यात्रा का विसर्जन किया गया। दोपहर को गरीबों को अन्नदान किया गया। शाम को समीपवर्ती गाँव आसोदा में सत्संग समिति द्वारा गुरुगीता, आसारामायण का पाठ, गुरुभक्ति के भजनादि का आयोजन किया गया।

पाली में : राजस्थान के इस क्षेत्र में पूज्य सद्गुरुदेव का जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पूज्य बापू के ५५ वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में शहर के मुख्य छः स्थानों पर छाछकेन्द्र चलाये गये, अस्पतालों में रोगियों को फल वितरण किये गये। साहित्य वितरण किया गया। हिन्दू सेवा मण्डल में कुष्ठ रोगियों को दोनों समय भोजन-प्रसादी दी गई। शाम को अनेक स्थानों पर पूज्य बापू के विडियो-सत्संग व हरिकीर्तन का कार्यक्रम देर रात तक चला।

सागर में : श्री योग वेदान्त सेवा समिति, सागर (म. प्र.) द्वारा ब्रह्मनिष्ठ योगीराज पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू के ५५ वें जन्मोत्सव के पावन दिन पर एक विशाल प्रभातफेरी का आयोजन किया गया जिसमें सागर क्षेत्र व अन्य ग्रामीण क्षेत्र की भजन मंडलियों ने भी भाग लिया। प्रभातफेरी जिन-जिन गली-कूंचों से गुजरती वहाँ के निवासीजन इस प्रभातफेरी की सराहना किये बिना न रहते। कैसा समय रहा होगा

कि जब उन साधक-भक्तों के पवित्र आंदोलनों से पूरा नगर हरि ॐ मय हो रहा था !

बड़नगर में : बड़नगर (जिला उज्जैन) में रेल्वे स्टेशन पर पीने के पानी की विकराल समस्या पर ध्यान देते हुए पूज्य बापू के जन्म-महोत्सव पर समिति द्वारा त्वरित योजना बनाकर 'हरि ॐ' चलित प्याऊ प्रारंभ की गई जिसकी प्रशंसा नगर में सर्वत्र की गई और समाचारपत्र भी सराहे बिना न रहे । उस दिन नगर के प्रमुख चौराहों पर निःशुल्क छाछ-वितरण किया गया । साथ ही नगर भर में पूज्य बापूजी के सद्विचारों के स्टीकर लगाये गये ।

देश-विदेश की ५०० से अधिक समितियों द्वारा पूज्य बापू के जन्म-महोत्सव पर्व पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये गये । कहीं दो हजार, कहीं दो सौ तो कहीं पाँच हजार बच्चों को भोजन-प्रसाद वितरित किया गया । विभिन्न शहरों, गाँवों, प्रांतों में पूज्यश्री के प्रागट्य महोत्सव के पावन दिन पर संकीर्तन यात्रा, विडियो सत्संग, भोजन प्रसाद, छाछ वितरण, आसारामायण व गुरुगीता का पाठ, दीन-दुःखी, बीमार-दर्दियों को कहीं फल-दूध तो कहीं औषधियों की सेवा, कहीं सत्संग तो कहीं सत्साहित्य वितरण किया गया ।

चावशाणा : धरमपुर (जि. वलसाड) से ८२ कि.मी. दूर चावशाणा गाँव में आसपास के वनांचल में बसे हुए आदिवासियों के लिए सत्संग व विशाल भंडारे का आयोजन दिनांक १२ से १४ अप्रैल तक किया गया जिसमें हजारों आदिवासी भाई-बहनों को अन्नदान, वस्त्रदान तथा दक्षिणा वितरित की गई । इस दौरान सभी आदिवासी भाई-बहनों ने 'हरि ॐ' व 'राम-राम' बोलकर ही भोजन करने का संकल्प किया ।

भोपाल : बालयोगी श्री नारायण स्वामी के सान्निध्य में दिनांक : १५ से १९ मई को भोपाल के आश्रम में विद्यार्थी ध्यान योग साधना शिविर का आयोजन हुआ जिसमें भोपाल और आसपास के सिहोर, विदिशा, होशंगाबाद एवं अन्य जिलों के विद्यार्थियों ने भाग लेकर जीवन को तेजस्वी एवं उन्नत बनाने का मार्गदर्शन प्राप्त किया ।

पू. बापू के आगामी सत्संग कार्यक्रम

गुरुपूर्णिमा महोत्सव : ३० जुलाई १९९६

'ऋषि प्रसाद' के सेवाधारियों के लिए

सुअवसर

ऊँचाइयों के शिखरों को स्पर्श करती हुई 'ऋषि प्रसाद' की प्रसार संख्या उत्साहित सेवाधारियों की अनवरत सेवा का प्रताप है । सेवाधारी साधकों का महत्त्व स्वीकारकर 'ऋषि प्रसाद' कार्यालय ने सेवाधारियों को आकर्षक उपहार देने का निर्णय किया है ।

जिस किसी सेवाधारी द्वारा बनाये गये सदस्यों की संख्या अंक क्रमांक ४३ के लिए १०० या उससे अधिक होगी उन्हें गुरुपूर्णिमा के शुभ पर्व पर विशेष उपहार दिया जाएगा ।

सेवाधारियों के अलावा सुहृदय पाठक भी १०० या उससे अधिक सदस्य बनाकर (जिसमें कम से कम १० आजीवन सदस्य होने चाहिए) इस सुअवसर का लाभ ले सकते हैं ।

अपने कर्त्तव्य को ठीक से करो । कार्य पूरी शक्ति लगाकर करो । तुमने कितना बढ़िया काम किया यह मत देखो किन्तु इससे भी और बढ़िया कर सकते हो कि नहीं यह सोचो । अपनी योग्यता का और विकास करो ।

दिल्ली के सत्संग में सराबोर हरियाना के तत्कालिन मुख्यमंत्री श्री भजनलाल अपने मंत्रीमंडल के साथ... पास में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री रज्जू भैया।

चावशाणा (धरमपुर, गुज.) के वनांचल में आयोजित हरिनाम संकीर्तन यात्रा, आदिवासियों में प्रसाद, दक्षिणा व वस्त्रवितरण।

श्री साईं बाबा की शिर्डी में आयोजित दिव्य ज्ञान सत्संग-वर्षा में झूमते शिर्डीवासी।

पू. बापू के ५५ वें जन्म-महोत्सव पर्व पर सूरतनिवासियों ने पूरे सूरत को हरिमय बना दिया। १०-१० हजार साधक-भक्त कीर्तन यात्रा में सड़कों पर निकल पड़े।